भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 6 | अंक 17 | उदयपुर बुधवार 15 सितंबर 2021 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

पेड़ों में आकाश-पाताल जाने की होड़ाहोड़ी

उत्कृष्ट प्रतिभाओं की छानबीन के लिए हर युग में प्रतियोगिता अथवा होड़ाहोड़ी रही जिससे प्रत्येक को अपनी निज की पहचान हो सके। बाजवक्त घमण्डी का सिर नीचा करने के लिए भी किसी-न-किसी प्रतियोगिता का आयोजन होता रहा है। स्कूलों में कछुआ और खरगोश की आपसी दौड़ अनेक वर्षों तक पढ़ाई जाती रही जिसमें कछुआ अपनी धीमी गति से चलता अन्त में विजयी घोषित हुआ और खरगोश अपनी स्फूर्ति से लम्बी दौड़ भरता हुआ भी घमण्ड के मारे बुरी तरह पराजित हुआ।

मनुष्य और जानवरों के अलावा वनस्पति जीवजगत में भी ऐसी प्रतियोगिता होने के संकेत लोकजीवन में मिलते हैं। उसके अनुसार धरती पर इस होड़ाहोड़ी में भांत-भांत के पेड़ों ने अपने विविध रूपों, स्वांगों तथा लीला-भेषों की जादूगरी दिखाई।

किसी ने पतला तो किसी ने भारी भरकम मोटा तना दिखाया तो किसी ने अत्यन्त लघु रूप से लेकर बड़े आकारी पत्तों में सौम्य-रौद्र रूप का प्रदर्शन किया। ऐसे ही किसी ने शाखाओं का विविध रूपा मोड़, आंकड़-बांकड़ दृश्य दिखाकर सर्कसी कौतुक दिखाया तो कोई अपनी काया के ओल्यूं-दोल्यूं या फिर चारोंओर वेल् वनस्पति की खूबियां लपेट लाया। कोई विविध खोखल-दरार लिए अजीब रूप में दाखिल हुआ तो कोई लचक लिये अपने ऊपर हिंडोला ताने, घोंसले लटकाये, घासफूस के डागले-घर सजाये मुखातिब हुआ।

इन विविध परिदृश्यों से लगा कि प्रतियोगिता का मूल विषय ये सब भूल गये सो विविध स्वांगी बहरूपियों के रूप में नजर आये। प्रतियोगिता में कई तरह की कानाफूंसी होने लगी। बहुत-सों ने तो पहलीबार ऐसा नजारा देखा कि सृष्टि में कैसी अद्भुत छटा है। जहरीले वृक्ष, अमृतदायी वृक्ष, जल निसरते वृक्ष, गोंद-सा पदार्थ देने वाले, भांत-भांत की शक्ल लिये मेवे, शहद की तरह तरल पदार्श देने वाले वृक्ष, मोटी चमड़ी, पतली चमड़ी वाले विविध रंगी वृक्ष, विविध स्वादी खट्टे, मीठे, कड़वे, कसैले, परपरे, गुठली, दाने, बेदाने वृक्ष, हिंसक, अहिंसक वृक्ष, बमुश्किल उखड़ने वाले अंगदपांवी वृक्ष, विविध ऋतु फूल, फल देने वाले, गंध-सुगंध देने वाले वृक्ष ; जहां कल्पना भी नहीं पहुंचे ऐसे-ऐसे वृक्ष।

वृक्ष ज्ञान देने वाले, बोध देने वाले, जीवक-मारक गंध देने वाले। अमरफल देने वाले, कार्यसिद्धि वाले, शकुनी, अपशकुनी वृक्ष, सिद्धिदायक, ऋद्धिदायक, समृद्धिदायक वृक्ष, सुहावने, डरावने वृक्ष। परचा देने वाले वृक्ष, देवत्व के प्रतीक वृक्ष, असंख्य जीवों को आश्रय, आहार और आजीविका देने वाले वृक्ष।

वृक्षों के नीचे अनेकानेक खनिज लवण पदार्थ। अन्दाज लगाना मुश्किल है कि वृक्ष मानव के लिए कितने उपयोगी हैं। वृक्षों का बसेरा कहां-कहां नहीं है। हमें तो जो कुछ दृश्य-जगत है वही-वही हमारी सृष्टि है।

इसके अलावा जहां हमारी पहुंच नहीं है, नजर भी नहीं, वह लोक कहां-कहां है। ऐसे कितने लोक कहां-कहां हैं। देवताओं के लोक कहां हैं। कितने हैं। उनके क्या-क्या नाम और उनकी क्या-क्या विशेषताएं हैं। आलौकिक और रहस्यमय लोक तो हम देख ही नहीं पायेंगे पर जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह भी तो हम कहां देख पा रहे हैं पर मनुष्य को जो ज्ञान-शक्ति प्राप्त है वह कितनी अद्भुत है, इसकी कल्पना भी हमारे बस में नहीं है।

हमारे ऋषि-मुनियों में अद्भुत ज्ञान-शक्ति थी जिसके बल पर वे तीनों लोकों की हलचल खंगालने में समर्थ और शक्तिवान बने। धरती पर जो गुफाएं, कन्दराएं और जंगलों का वैविध्य है उनमें अज्ञात बने अनेक लोग साधना-तपस्या करते दीर्घकाल में जो शक्तिपुंज धारण कर पाये उसके कारण वे इतने सूक्ष्मजीवी हो गये कि हमारे लिये दृश्यवान नहीं हैं।

जो भी हो, पर हमने अपनी बात रूंख-गाथा से शुरू की थी कि ऐसी प्रतियोगिता के कारण वृक्षों की असंख्य नस्लें, किस्में और उनकी निराली, अनोखी, अलौकिक छवियों का हमें साक्षात्कार हो सका पर प्रतियोगिता का केन्द्रीय पक्ष ऐसे वृक्षों की खोज, परख, पहचान और प्रतीती थी कि जो ऊंचाई को अधिकाधिक वरण करता हुआ आकाशगामी सर्वोच्च यात्रा कर सके और दूसरा उतना ही नीचे धरती के तल तक पहुंच अपना फैलाव दे सके लेकिन दोनों की डोर धरती थाम रखे।

इस प्रतियोगिता में अन्ततोगत्वा दो ही वृक्ष विजेता बने। नीचे की ओर अपनी जड़ें पहुंचाने वाला और उन जड़ों से धरती का अधिकाधिक छोर नापने वाला बड़, वट याकि बड़ल्या और ऊपर की छोर नापने वाला चन्दन।

चन्दन की खासियत-चन्दनम न वने-वने। चन्दन हर कहीं, हर वन में नहीं होता। इस पर सांप भी लपट जाय, अपना जहर नहीं छोड़ सकता। यह मुश्किलों, आफतों, परेशानियों तथा विपत्तियों के समय साथ देने वाला आत्मरक्षक इच्छित फल देने वाला पेड़ है। यह मनुष्य को सद्गति देने वाला, कर्मकाण्ड के लिए उपयोगी तथा यज्ञ, होम के लिए अनिवार्य वृक्ष है। मृतक की दाहक्रिया में इसकी लकड़ी का उपयोग उसे सद्मार्गी, सद्गामी तथा सद्गति प्रदान करता है।

चन्दन को लेकर अनेक दृष्टान्त, विवरण, कथा-गाथा तथा मिथक, कहावत, मुहावरे प्रचलित हैं। अपने धुर बचपन में सोनाबाई-रूपाबाई की कहानी मैंने एक बुढ़िया से सुनी थी जो हर परिवार के बालकों में संध्या समय दादी-नानी द्वारा कही-सुनाई जाती थी। बाद में जब मैंने लोक प्रचलित बालकथाओं का अध्ययन-संग्रह किया तो थोड़े बहुत रूपान्तर से कई प्रान्तों में इसे प्रचलित पाया।

संक्षेप में कहानी का सार है- सोनाबाई-रूपाबाई दो बहिनें थीं। सोना के सोने तथा रूपा के चांदी के बाल थे। दोनों नदी किनारे नहाने गई। नहाते वक्त उनके सिर से कुछ बाल उतरे जो उन्होंने अलग-अलग दोनों नदी में बहा दिये। बहते-बहते वे उसक भाई के हाथ लगे जो नदी में स्नान करने गया था।

घर आकर वह अनमना हो अपने कमरे में बैठ गया। किसी से कोई बोलचाल नहीं। गुमसुम उदास देख सब चिंता में पड़ गये। पूछने पर उसने बताया कि वह ऐसी बालाओं से विवाह करना चाहता है जिनके सोने-चांदी के बाल हैं। इसके लिए खूब छानबीन की गई। अन्त में पता लगाया कि दोनों राजकुमारियां हैं जो महलों के पीछे ही बहती नदी में नहाने गई थीं। वे उसी राजकुमार की सगी बहिनें हैं।

राजकुमार तो जिद्द पर चढ़ बैठा। हजार समझाने पर भी नहीं समझा। अन्त में मजबूर हो विवाह की तैयारी करनी पड़ी। बहिनों को पता चला तो उन्होंने अपने ही मां-जाये भाई से विवाहसूत्र में बंधना जघन्य पाप समझा।

सजधजकर बारात आ गई पर बहिनें तनिक भी नहीं चाहतीं। चाहता कोई भी नहीं था पर सब बेबस थे। अन्त में आव देखा न ताव, बहिनें अपने आंगन में खड़े चन्दन वृक्ष पर चढ़ गईं। घरवालों ने उनसे बड़ी ही अनुनय विनय की कि नीचे उतरो। लग्न का मुहूर्त टला जा रहा है। सवाल-जवाब का यह क्रम चलता रहा पर बहिनों ने अपना पक्ष रखते चन्दन से प्रार्थना की कि तुम ऊंचे इतने आकाश में बढ़ते-फैलते जाओ कि जिससे यह धरती फट पड़े और हम उसमें समा जायें और यही हुआ। पद्यबद्ध संवाद का नमूना देखिये-

परिजन - उतरो उतरो ए म्हारी सोनाबाई बेन्या, रूपाबाई बेन्या,
ढोल नगाड़ा बाजीरया, परणवा री वेलां टली रई

बहिनें - आगे तो मीं वीरासा कैती, अबै सायबजी कयो ए नु जाय
वध वध रे चंदण रा रूंख बद्याई जा, धरती फाटे तो म्हैं धसां।

बड़ले की कथा एक पूरी पद्यबद्ध गाथा है जो आदिवासी भीलों में प्रचलित है। जब मैंने इन आदिवासियों में प्रचलित गवरी नृत्यानुष्ठान को अपने पीएच.डी. शोध का विषय बनाया तो लिपिबद्ध की। यह 1964 की बात है। यह गाथा सृष्टि की उत्पत्ति की, उसके मूल की है। उसके अनुसार नीचे ठेठ सातवें पाताल में राजा वासक की बाड़ी में यह वट वृक्ष था जो बड़ी मन्नत से, देवियां नेवला का रूप धर रास्ता बनाती पहुंची। अनेक मुसीबतों के बाद देवियां सशर्त उस वृक्ष को धरती पर लाई। यहां चट्टान पर स्थिर किया। दूध-दही से उसे सींचा। उसके साथ और भी वृक्ष-फुलवारी आई। तब उसका आकार-प्रकार बड़ा था। थाली जितने बड़े पत्ते तथा स्वर्णरंगी कोंपलें थीं।

यह वृक्ष करोड़ों बीज बोने पर एकबार फलित होता है। इसकी जड़ें बड़ी लम्बी धरती को छूती नीचे पाताल तक पहुंच फिर ऊपर वृक्ष रूप में निकलती हैं और यह क्रम नीचे-ऊपर, ऊपर-नीचे चलता आगे-से-आगे की धरती नापता बढ़ता-बढ़ता बारह बीघा तक फैलाव लिये अपना रूप दिखाता है। इस पर देवियां ही देवियां निवास करती हैं। हींडा हींडती अर्थात् झूला झूलती रहती हैं। यह गाथा बड़ी दिलचस्प है जो गवरी के प्रारम्भ में ही सुनने को मिलती है।

देवियों के झूलने के कारण यह वृक्ष बड़ल्या हींदवा नाम से धरती पर आज भी देखने को मिलता है। मैं कई बार उस स्थान पर गया हूं। यह स्थान उदयपुर के पास नाथद्वारा के खमनौर गांव में है जो तनिक भी कपोल कल्पित नहीं है। गाथा में उस काल का, समाज तथा मानव जीवन का बड़ा ही सुन्दर वर्णन मिलता है।

नोट - इस विषयक प्रबुद्ध पाठकों के विचार एवं अन्य कोई जानकारी हो तो उसका स्वागत रहेगा।

पोथीखाना

राजस्थानी लोककथा संदर्भ कोश

राजस्थान लोककथाओं का एक ऐसा महासागर है जिसका ओरछोर नहीं आंका जा सकता। समय-समय पर यहां से प्रकाशित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में अनेकों लोककथाओं का प्रकाशन हुआ है वे अब बंद हो चुकी हैं। जहां कहीं इक्कादुक्का उनका प्रकाशन भी हो रहा है तो या तो वे बंद होने के कगार पर हैं अथवा उनमें उस तरह का कथा-साहित्य प्रकाशित नहीं हो रहा है।

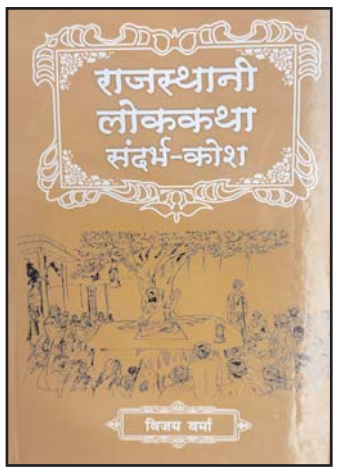

जो साहित्य प्रकाशित हुआ है वह भी ऊंट के मुंह में जीरा ही है और वे पत्रिकाएं भी नहीं के बराबर सुरक्षित हैं इस दृष्टि से उनकी जानकारी देकर विजय वर्मा ने बड़ा उपयोगी तथा महनीय कार्य किया है ताकि शोधार्थियों और विद्वानों को एक जगह उनकी जानकारी उपलब्ध हो सके।

राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से प्रकाशित 'राजस्थानी लोककथा सन्दर्भ कोश' 80 पृष्ठीय इस पुस्तक में जिन महानुभावों तथा संस्थाओं ने लोककथाओं का संकलन-सम्पादन उनके साथ-साथ जो विवेचनात्मक ग्रंथ प्रकाशित हुए उनकी जानकारी दी है। जिन पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखादि का विवरण दिया है उनमें राजस्थान भारती, मरु भारती, वरदा, शोधपत्रिका, वैचारिकी, विश्वंभरा, रंगयोग, रंगायन, मरुश्री, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति तथा राजस्थानी गंगा सम्मिलित की गई है।

पुस्तक के अंत में राजस्थानी बातों का संग्रह एवं प्रकाशन नाम से अगरचंद नाहटा का वरदा में 1959 में प्रकाशित एक विस्तृत आलेख छापा है परन्तु बहुत सारी जानकारी इसमें आनी रह गई है जो स्वाभाविक है। यह कार्यनिरन्तर होते रहना चाहिये। अनेक विद्वानों ने लोककथाओं पर अच्छा कार्य किया है जो छपा है और बहुत सारा अप्रकाशित भी है।

मैंने स्वयं ने अनेक लोककथाओं का संकलन और संग्रह किया है। उनमें से 'आछी करणी पार उतरणी' पुस्तक में 37 लोककथाएं दी हैं जो 1983 में उदयपुर के तिलक मंच से छपी। लोककथाओं का एक पूरा संग्रह मैंने नरोत्तमदासजी स्वामी के माध्यम से लक्ष्मीकमल को दिया जिसने उनके निर्देशन में पीएच.डी. की। मेरी अनेक पुस्तकों में लोककथाएं आई हैं। अनेक विद्वानों को मैंने उनकी चाह के अनुसार लोकथाएं भेजी हैं।

आयरलैण्ड की एक छात्रा अनेक देशों का भ्रमण कर मानवमूल्यजनित संक्षिप्त लोकथा का संग्रह करने की दृष्टि से मेरे पास भी आई जिसे मैंने दशामाता की कहानी सुनाकर दी जो सर्वश्रेष्ठ कथा सिद्ध हुई। यह कथा सूर्यदेव से सम्बन्धित थी जिनके कारण विविध ऋतुए बनीं।

मेरी आत्मजा डॉ. कविता ने लोकव्रत कथाओं पर तथा डॉ. कहानी ने संझ्या मण्डन पर शोधप्रबंध लिखा। संझ्या का उद्भव भी लोककथाजनित बगड़ावत लोक महाभारत में वर्णित संझ्या नामक बालिका से बताया जो खोड्या से विवाहित हुई। सांझी का एक प्रसिद्ध गीत इसका साक्षी है-

'खुड़-खुड़ रे म्हारा खोड्या जंवाई थूं संझ्या ने लेवण आयो रे।' इस पर सर्वप्रथम मैंने 1961 के सितम्बर अंक में एक लेख लिखा था। उसके ठीक 50 वर्ष बाद उज्जैन की एक संस्था द्वारा सांझी पर एक संगोष्ठी हुई जिसमें मैं, बालकवि बैरागी, डॉ. पूरन सहगल और बसंत निरगुणे आदि सम्मिलित हुए।

डॉ. नरेन्द्र भानावत ने जैन दर्शन एवं साहित्य की विविध विधाओं पर 70 के करीब ट्रेक्ट प्रकाशित किये। उनमें भी कुछ जैन लोककथाएं हैं। मेरे द्वारा चैन्नई से छपी पुस्तक 'जैन लोक का पारदर्शी मन' में भी मैंने धर्मस्थानों में कही जाने वाली लोककथाओं का जिक्र कर कुछ कथाएं दी हैं।

अपनी थापा, माण्डना, मेंहदी जैसी और भी कई पुस्तकों में मैंने अपने विवेचन में लोककथाओं के माध्यम से उनके उद्भव और विकास के प्रसंग देकर उनके प्रामाणिक सन्दर्भ प्रस्तुत किये हैं। सृष्टि के उद्भव तथा वनस्पति जगत के उल्लेखों से राजस्थान-मेवाड़ का क्षेत्र विश्व में अपनी पहचान दिये है ऐसी जनजातियों में अनेक गाथाएं प्रचलित हैं जिनका मैंने खुलकर उल्लेख किया है। लोककथाओं पर मेरा एक संग्रह दिल्ली से आ रहा है।

जो भी हो, पुस्तक के प्रारंभ में प्रस्तावना में विजय वर्माजी ने जो सुझाव दिये हैं वे हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। ये सुझाव हैं-

(1) राजस्थानी लोकवार्ता के अन्य अंगों जैसे लोकगीत, लोकसंगीत, लोकगाथा, लोकनाट्य, पहेलियां, कहावतें, मेंहदी, मांडने, थापे, पड़ चित्रण आदि के बारे में भी ऐसे सन्दर्भ कोश बनाकर छापे जाने चाहिएं।

(2) ऐसे उद्यम अन्य सभी भाषाई क्षेत्रों में हुए / हो रहे कार्यों के लिए होने चाहिएं।

(3) लोकवार्ता के विविध अंगों के अलावा विविध साहित्य-कला, सम्बन्धी जो सामग्री अलभ्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है उसे भी पुस्तकमाला के रूप में छपवायें।

(4) राजस्थान सरकार इस कार्य के समन्वय और पर्यवेक्षण का काम अपने हाथ में ले तो शुभ होगा।

बिणजारो का 41वां वार्षिकांक

राजस्थान के पिलानी से नागराजजी शर्मा के निष्ठावान सम्पादन में राजस्थानी में बिणजारो नामक वार्षिकांक का 41वां अंक है। इन अंकों के माध्यम से कोई भी विद्वान मनीषी राजस्थानी साहित्य संस्कृति कला आदि में सबरंग सब विधाओं में लिखने वाले सृजनधर्मियों के बारे में परिचित हो सकता है।

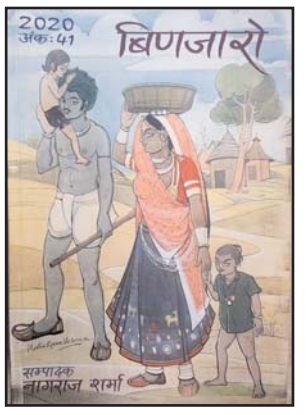

प्रस्तुत अंक में भी कविता, कहानी, निबन्ध, लघुकथा, व्यंग्य, संस्मरण, साक्षात्कार, यात्रा, एकांकी जैसी सभी विधाओं पर बड़ी टंच और टणकी रचनाएं सम्मिलित की गई हैं। जिन विश्वविद्यालयों में राजस्थानी विभाग हैं वहां और जहां-जहां देश-विदेश में राजस्थानी निवास करते हैं उनके लिए बिणजारों की यह विविध रत्नों वाली अनमोल विरासत दस्तक देती अपनी सौरभ बिखेरने में अहर्निश उपयोगी सिद्ध होगी। इसके लिए मानीता मनस्वी नागराजजी को घणै-घमैमान राम-राम बंचावसी। **- डॉ. कहानी भानावत**

रेडियो जुबानी भाग-3 पर अभिमत

महेन्द्र मोदी द्वारा लिखित 'सिमटती धूप लरज़ते साये' रेडियो जुबानी कथामाला का तीसरा भाग है। शालीनतापूर्वक आकाशवाणी की आरती उतारने के दौरान उन्हें जो अंगूरीदाख अनुभव हुए वे पढ़ते-ही-जाने जैसे रोमांचक हैं।

अपनी जुबानी की कहनी में महेन्द्र मोदी लरज़ते साये का जिस होशियारी से वर्णन करते हैं वह बड़ा ही रोचक बन पड़ा है। उस रोचकता में जिज्ञासा, उस जिज्ञासा में सामाजिक सरोकारों की संश्लिष्टता और वह भी जिस खूबीदार कलाबूती से उकेरी गई है वह लाजवाब है।

उदाहरण के लिए जोधपुर के आकाशवाणी केन्द्र में ट्रांसफर पर आये असिस्टेंट डायरेक्टर बंगाली बाबू के साथ बीती एक मजेदार घटना का जिक्र करते हुए मोदीजी लिखते हैं कि तब के बहुप्रसिद्ध लोकसंगीत गायक कालूराम प्रजापति का राजस्थानी लोकगीत 'ऊंदारा ऊंदरी की हुई लड़ाई' प्रसारित हुआ। उसे सुनते ही बंगाली बाबू अपने कमरे से चीखते बाहर निकले और चिल्लाये- 'बौन्द कोरो बाबा बौन्द कोरो ये गाना। तुम लोक हमारा नौकरी ले लेगा।' बंगाली होने के कारण वे राजस्थानी तो दूर, हिन्दी भी नहीं जानते थे। असल में वे ऊंदरा ऊंदरी का अर्थ चूहा-चूहिया नहीं समझ इंदिरा-इंदिरा समझ गये थे।

गीत का प्रसारण बंद होते ही कालूराम प्रजापति आगबबूला हुए। वे एक बड़ा सा शिकायती पत्र लिख लाये। उसके कारण बंगाली बाबू थर-थर, थर-थर कांपने लगे। उन्होंने कालूराम प्रजापति से माफी मांगी।

(पृ. 39-40)

यह सच है कि सभी अधिकारी एक जैसे नहीं होते। मोदीजी लिखते हैं- 'कुछ लोग होते हैं जो आपकी जिंदगी में कुछ मिनटों के लिए आकर भी एक अहम रोल अदा कर जाते हैं, आपके दिमाग पर एक ऐसा असर छोड़ जाते हैं कि आप उन्हें कभी भुला नहीं पाते, वहीं कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो लम्बे अरसे तक आपके साथ बने रहने के बावजूद आपको जरा भी मुताम्सिर नहीं कर पाते।'

(पृ. 81)

कभी-कभी ऐसे अफसर से पाला पड़ जाता है कि उसकी शक्ल देखने का मन भी नहीं होता। वह हर वक्त आतंकी मुद्रा में रहकर ही अपनी शेखी बघारता लगता है। ऐसी स्थिति में वह अपने साथ के अफसर के साथ भी तू-तू मैं-मैं करने में नहीं चूकता। नौबत कभी-कभी हाथापाई तक आ जाती है तो स्थिति बेकाबू हो जाती है।

मोदीजी के साथ भी एकबार ऐसी ही घटना घटित हुई। जब वे सूरतगढ़ आकाशवाणी केन्द्र में थे। वे लिखते हैं- 'नये डायरेक्टर साहब डायरेक्टर तो बन गये थे मगर उनमें डायरेक्टर वाली कोई काबलियत नहीं थी। न उन्हें रेडियो के हिसाब से बोलना आता था और ना ही किसी प्रोग्राम की कोई समझ उनमें थी। आकाशवाणी को वो आकासवाड़ी बोलते थे और मीटिंग में ऐसी-ऐसी बातें करते थे कि पूरे वक्त लोग एक-दूसरे के सामने देखकर बस मुस्कराते ही रहते थे। वो हमेशा मीटिंग में बोलते थे- 'मुझे आकासवाड़ी में सुद्ध बोलने वाले ही चाहिए।'

(पृ. 95)

लेकिन कभी-कभी जब किसी चीज की अति हो जाती है तो पारा सातवें आसमान पर चढ़कर अपनी औकात बताने में तनिक भी देर नहीं करता। मोदीजी स्वयं अपने साथ घटी एक अनहोनी घटना का उल्लेख करते हैं- 'जो लोग रेडियो से जुड़े हुए रहे हैं वो मेरी बात की ताईद करेंगे कि जब भी कोई फैसला लेने का वक्त आता था, ड्यूटी ऑफिसर को ही फैसला लेना होता था और इंजीनियर्स को उस फैसले के मुताबित काम करना होता था। के..... साहब पर जाने उस वक्त क्या भूत सवार था कि वो चिल्ला-चिल्लाकर मुझे ज्ञान देने लगे। मैं थोड़ी देर उनकी बातें खामोशी से सुनता रहा। इससे उनका हौसला और बढ़ गया और वो मुझ से झगड़ा करने लगे। अब मैं अपने पर काबू नहीं कर सका। मैंने कहा, दुबारा कहिये जो आपने अभी कहा। वो चिल्लाकर बोले- हां आप ड्यूटी ऑफिसर हमारे अंडर में काम करते हैं।

बस इतना बहोत था मेरे सब्र को तोड़ने के लिए। मैंने उनकी कॉलर पकड़ी, तीन-चार बार उनके सर को दीवार से टकरा दिया, खींचकर दो झापड़ उनके मुंह पर रसीद कर दिये और बोला, ये लो अफसर के बच्चे, झाड़ अपनी अफसरी अब जहां भी झाड़नी हो।'

(पृ. 97-98)

महेन्द्र मोदीजी का यह सौभाग्य रहा कि जगह-जगह के आकाशवाणी केन्द्रों में रहकर उन्हें बड़ी-बड़ी नामचीन हस्तियों से मुलाकात कर उनसे आशीर्वाद लेने का पुण्य मिला।

सन् 1984 में इलाहाबाद में जब उन्होंने महादेवी वर्मा से उनके निवास पर भेंट की तो राजस्थान की याद कर वे बोलीं- 'प्रकृति ने वहां रंग की सौगात बांटने में कंजूसी करदी तो क्या हुआ, वहां के लोगों ने अपने वस्त्रों को रंगों से इस तरह सजा लिया कि प्रकृति ने भी इनसे हार मानली।

मुझे राजस्थान बहोत पसंद है। सुनहरे रेत के धोरों में रंगबिरंगे परिधानों में सजे स्त्री-पुरुष ऐसी छटा बिखरते हैं कि बस देखते ही बनती है। एकबार मैं चित्तौड़ गई थी। वहां के लोग मुझे देखकर ज़ार-ज़ार रोने लगे। कहने लगे, देखो हमारी मीरां लौट आई है। मैंने कहा, लोग कहते हैं राजस्थान में पानी की बहोत कमी है। कौन कहता है यहां पानी की कमी है। अरे, यहां का सारा पानी तो यहां के लोगों की आंखों में सिमट आया है।'

(पृ. 197-98)

दूसरी बार जब आकाशवाणी केन्द्र के पिछवाड़े कॉलोनी बनी तो मोदीजी ने प्रथम वृक्ष महादेवी वर्मा के करकमलों द्वारा लगवाया। ऐसे ही उपेन्द्रनाथ अश्क से उनकी भेंट बड़ी यादगार बनी। अश्कजी को तो उन्होंने पूरे दिन ही अपने स्कूटर पर बैठाकर घुमाया।

राजीव गांधी का क्षेत्र होने के कारण उनके सांसद और फिर प्रधानमंत्री होने के दोनों समय के कार्यक्रमों के कवरेज के अवसर मोदीजी को मिले। उन्होंने दोनों रूपों का बड़ा ही दिलचस्प वर्णन किया है। वे लिखते हैं-

'प्रधानमंत्री बनने के बाद जो राजीव गांधी सुनने वालों को अपने भाषण से मंत्रमुग्ध कर दिया करते थे, वही राजीव गांधी सुल्तानपुर में जब भाषण देने के लिए खड़े हुए तो साफ महसूस हो रहा था कि वो अंग्रेजी में सोच-सोच कर उसका हिन्दी में अनुवाद कर बोल रहे हैं लेकिन वक्त बहोत बलवान होता है। कहां तो मैं उस राजीव गांधी से इस तरह सटकर बैठा था कि हमारी कुहनियां एक-दूसरे को रह-रहकर छू रही थी और कहां वो वक्त आया कि उन तक पहुंचने में मुझे जाने अपना कितना पसीना बहाना पड़ा।'

(पृ. 244-45)

कहना नहीं होगा कि मोदीजी की यह आत्मकथात्मक माला सबको आत्मविभोर करेगी और पढ़ते हुए आकाशवाणी की प्रभावी किन्तु समयबद्ध नियंत्रित अनुशासनात्मक शब्दावली की प्रभावी प्रस्तुति का जायका लेंगे। उनके लेखन की यह भी विशेषता है कि उनकी भाषा में हिन्दी संग उर्दू जबानी एक नई खनक के साथ खड़ताली ताल देती सुहाती है। **- म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (128) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पूरे विश्व में मोलेला मृण-कला को महकाई मोहनजी ने

सन् 1959-60 में भारतीय लोककला मण्डल में काम करते लोककलाओं के विविध सांस्कृतिक पक्षों बाबत् अध्ययन-अनुसंधान के क्रम में मोलेला जाकर वहां के माटी-शिल्पी कुम्हार-परिवारों से भेंट करने का सुयोग मिला।

परम्परा से वहां के कुम्हार देवी-देवताओं की मृणमय मूर्तियां बनाकर अपना जीवन बसर करते हैं। ये मूर्तियां राजस्थान के अतिरिक्त गुजरात, उत्तरप्रदेश तथा मालवा तक के देवरों में प्रतिष्ठापित की जाती हैं।

इन्हें बनाने वाले कुम्हारों के यहां पन्द्रह घर हैं जिनके मुखियों के नाम हैं- चूना, हीरा, भजा, वरदा, घासी, भूरा, भीमा, मन्ना, पन्ना, छग्गा, खीमला, गोत्या, रूपा, मांगू तथा गोपा। ये सभी आसोला गोत्र के मारू मेवल्यार कहलाते हैं। इनमें से मैंने कई व्यक्तियों से सम्पर्क किया। उनके घरों में जाकर उनके काम को देखा, परखा। उनके विविध चित्र लिये और मूर्ति बनाने से लेकर उनकी उदरपूर्ति तथा जन्म-मरण तक की कईएक बातें पूछीं, सुनीं।

इनमें काला-गोरा भैरू, सरवण, लाला-फूलां देवी, खाकल तथा ताखाजी को छोड़ शेष सभी अपने-अपने वाहनों पर आसीन हैं। दुर्गामाता (बबरची शेर), आमजमाता (पाड़ा और शेर), गूना-मेनू (घोड़ा), धर्मराज (घोड़ा), सूरमाता (सूअर), चावंडा (हाथी), रामू (गधा), केवल (ऊंट), सुहारबाबा (घोड़ा), कूकड़ामाता (मुर्गा), मच्छीमाता (मछली), हंसमाता (हंस), नारसिंघी (केसरीसिंह) के कलात्मक अंकन देखने ही बनते हैं।

मूर्ति-निर्माण के पीछे की आस्थाजनित घटना का उल्लेख करते पैंसठ वर्षीय हीराजी ने बताया, 'बीस पीढ़ी पहले दो अंधे भाइयों को मिट्टी के घोड़ वाली मूर्ति का सपना आया पर उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। एक दिन जब फिर सपना आया तो दोनों भाई बिस्तर से उठे। उठते ही दोनों अंधों को दिखने लग गया। उन्होंने देखा कि पास ही में जमीन पर एक घुड़सवार की छाया बनी हुई है। उन्होंने उसी तरह की मूर्ति बनाना प्रारम्भ कर दिया। वह धर्मराज की छाया थी।

धर्मराज ने एक हाथ में कमल का फूल, दूसरे हाथ में भाला तथा सामने नाग क्रीड़ा कर रहा था। उस रात फिर स्वप्न आया कि जो मूर्ति तुमने बनाई है उसे लेकर पलेवा गांव की घाटी के पास के देवरे के वहां आ जाना। दोनों ने ऐसा ही किया। देवरे के वहां मूर्ति की स्थापना के बाद उन्हें वचन रूप में प्रति मूर्ति बनवाई की लागत सवा रूपया, पांच सेर आखा (धानचून), नारियल, ओछाड़ और बीला-बीली के नाम का एक रूपया लेने का बोल दिया और कहा कि यदि तुम मद माटी (शराब-मांस) छोड़ दो तो तुम्हें सोने का पालना झूलने की नसीब हो। दोनों ने कहा कि और सब तो ठीक है परन्तु दारू-मांस हम नहीं छोड़ सकते। उनकी इस जिद्द के कारण दोनों की आंखें फिर से जाती रहीं।'

मूर्तियों के अतिरिक्त उसी रंग-शिल्प में ये कुम्हार शिव, पार्वती, पणिहारी, भैरू, हाथी, गणेश, ऊंट, पुतली, हनुमान, तोता, चिड़िया, मोर, बांसुरीवाला, शेर मगर जैसे कलात्मक खिलौने भी बनाते हैं। ये खिलौने रमत्ये कहलाते हैं। वर्ष भर में सर्वाधिक मूर्ति बिक्री के दिन मई सातम, वैसाखी पूनम, कार्तिक पूनम और आसोजी महीना है।

ये मूर्तियां दो बेंत, चार बेंत तथा आठ बेंत नाप की तीन साइज में बनती हैं। इनमें चार बेंत यानी दो फीट वाली अधिक बनती हैं। सबसे कम आठ बेंत वाली बनाई जाती है। इनमें से एक-एक मूर्ति मैंने अपने लिए खरीदी। आठ बेंत वाली धर्मराज की प्रतिमा तो मेरे गृह की शोभा बनी हुई है।

मूर्ति बनाने के बाद सूखने पर सबसे पहले सफेदा अर्थात् खड़ी पोती जाती है। उसके बाद जो कोराई की जाती है उसमें हड़मची, सिन्दूरी, पियावड़ी, काला, नीला, आसमानी, हरा रंग कर मूर्ति को चमकाई जाती है। एक मूर्ति में देवता के विभिन्न अंगों, वाहन, आयुध तथा पहचान के अनुरूप रंग किया जाता है। खड़ी मंगरूप की सुप्रसिद्ध खान से लाई जाती है। किवदंती है कि मंगरूप में साढूमाता ने एक रात विश्राम किया। रात को शेरनी आई जो देवनारायण को अपना थन (स्तन) चूंखा गई। इस वक्त जहां दूध का छींटा गिरा वहां खड़ी की खान हो गई।

डॉ. भानावत से चर्चा करते मोहनजी

धीरे-धीरे शिल्पकारों ने मांग के अनुसार कई तरह की मूर्तियां तथा खिलौने बनाने प्रारम्भ किये। मूर्तियां राजस्थान के अलावा गुजरात, मालवा तक के गांवों में प्रतिष्ठित की जाती है। प्रतिष्ठा के स्थल देवरे कहलाते हैं। मूर्ति विषयक देवता का प्रतिनिधि भोपा कहलाता है जिसके शरीर में प्रकट होकर देव पुरुष लोगों की समस्याओं का निराकरण कर ग्रामीणजनों को हर आपदा से बचाते खुशहाल जीवन देते हैं।

प्रारम्भ में मूर्ति लेने भोपा आदि मोतबीर पैदल मोलेला पहुंचते और पुरुष-मूरत को सफेद तथा स्त्री-मूरत को लाल कपड़े (ओछाड़) में लपेट सिर पर आड़ी, सुलाती हुई ले जाते। देवरे में खड़ी मूर्ति के रूप में विशेष जागरण-उत्सव के साथ प्रतिष्ठित करते हैं।

मोलेला मेवाड़ के राजसमंद जिले का मृण कलाकृतियों का विश्वप्रसिद्ध गांव है जो उदयपुर से 55 किलोमीटर, राजसमंद से 18 किलोमीटर, हल्दीघाटी से 7 तथा रक्ततलाई से 3 किलोमीटर दूरी लिए है। कुम्हारों का बहीभाट गोगुन्दा के पास मजावड़ी गांव में रहता है जिसके पास शिल्पी-पुरखों की पूरी वंशावली सुरक्षित है।

मूर्ति-निर्माण में कुम्हारों के सभी परिजन हाथ बंटाते हैं। लड़की चूंकि पराये घर जाकर गृहस्थी बसाती है इसलिए उससे काम नहीं लिया जाता है। इनमें कहावत भी प्रचलित है- 'आई काम करै, जाई नी करै' अर्थात् घर में आने वाली बहू काम में हाथ बटाती है। पराये घर जाने वाली बेटी काम नहीं करती है।

मूर्ति-निर्माण के पीछे सम्बन्धित देवी-देवता का पूरा इतिहास छिपा रहता है। सुहारबाबा को फुंवारबाबा भी कहते हैं। गूना-मेनू गायरियों में पूजे जाते हैं। गोरचर घोड़े की सवारी लिये है। पांच देवियों की पंचदेवी हरिजनों में पूजित है। ताखाजी (तक्षराज) की मूर्तियां विविध रूपों में, चलता सांप, बैठा सांप, ईडोणी की शक्ल लिये ठोड़ी ऊपर किये, एक फणी, पांच फणी, सात फणी तथा नौ फणी (फणवाली) भी बनाई जाती हैं।

सवारी के अनुसार भी देवियों के नामकरण मिलते हैं। यथा- मच्छीमाता, कूकड़ामाता, नागणीमाता, हंसामाता, सांडमाता, नारसिंघी, हस्तिमाता, सूरमाता जिनके क्रमशः मछली, मुर्गा, नागिन, हंस, सांड, शेर, हाथी, सूअर वाहन हैं।

मूर्तियां लकड़ी से अग्नि प्रज्वलित कर जिस स्थल पर पकाई जाती है उसे 'अवाड़ा' कहते हैं। मूर्ति-निर्माण वाली मिट्टी के साथ गधे की लीद, कण्डों की राख, चाक (पीली मिट्टी), लकड़ी का महीन बूरा (चूरा), गाय का गोबर तथा चावल की भूसी मिलाकर लचीली बनाई जाती है।

बिना किसी सांचे के मिट्टी का लौंदा लेकर ऊंगलियों तथा हथेली की थपाई से मिट्टी की मोटी परत कर उसके नाकनक्श आदि उभारे जाते हैं। इसके लिए छोटी सी भाले के आकार वाली धारदार भालड़ी अधिक उपयोगी होती है।

मेवाड़ के भोपे मोलेला से मूर्ति को जयसमंद के पास गातोड़जी के देवरे ले जाकर वहां की छाप दिला फिर अपने देवरे ले जाकर प्रतिष्ठा करते हैं। ये गातोड़जी लोकदेवता गोगाजी हैं। कहते हैं यहां सर्प की बांबी है। जिस रास्ते सुरंग बनी वह ठेठ उज्जैन निकलती है।

श्रेष्ठ शिल्पी के रूप में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करके भी इस छोटे से गांव ने भारतीय मृण-कला-शिल्प के क्षेत्र में अपने को गौरवमण्डित किया है। देश-विदेश में आयोजित होने वाले हस्तकला शिल्प मेलों में भाग लेकर यहां के कुम्हारों ने राजस्थान के रंगशिल्प से विशिष्ट पहचान कराई है। सन् 1981 में पहलीबार यहां के खेमराज कुम्हार ने मूर्ति-निर्माण 'टेराकोटा' के क्षेत्र में राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त किया तब से यह गांव विश्व की आंखों में चढ़ा हुआ है। खेमराज के जिस मूर्तिशिल्प का पुरस्कार के लिए चयन किया गया वह 25 गुणा 3 फीट का था जिसमें 24 देवी-देवताओं का अंकन था।

यहां के कलाकारों में मोहलाल कुम्हार अग्रणी कलाकार हैं जिन्होंने सर्वाधिक पुरस्कार और सम्मान अर्जित किये। 04 फरवरी 1939 को जन्मे मोहनजी ने आठ वर्ष की उम्र से ही मृण-शिल्प की बारीकियां जानकर मूर्ति-निर्माण शुरू कर दिया। सन् 1981 में पहलीबार उनके हाथ की बनी मूर्तियां पसंद कर इंग्लैण्ड ले जाई गईं। उसके बाद तो उनका सितारा बुलन्दी को स्पर्श करता ही रहा। विदेशों में कई जगह उनकी कला-कृतियां खरीदी गईं। सन् 1986 में अमेरिका की एक प्रदर्शनी में मोहनजी ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। वहां उन्हें विशिष्ट पहचान मिली।

1982 में पर्यटन विभाग ने उनकी कलाधर्मिता को जगजाहिर किया। नई दिल्ली में उनके द्वारा बनाये गये 24 गुणा 6 फीट के पैनल को बड़ी सराहना मिली। इसी पैनल को इंग्लैण्ड की एक प्रदर्शनी में उत्कृष्टता मिली। इसके पश्चात 1986 में अमेरिका के मदर अर्थ फोरम में आयोजित कार्यशाला तथा 1991 में फ्रांस की एक कार्यशाला में उनके शिल्प को देख लोग दांतों तले अंगुली दबाने को विवश हुए। फिर तो कई सम्मानों तथा पुरस्कारों की जड़ी लग गई।

जापान तथा पेरिस में भी वहां की सरकार के निमंत्रण पर मोहनजी ने कार्यशाला आयोजित की। राष्ट्रपति द्वारा नेशनल अवार्ड, शिल्पगुरु अवार्ड तथा राज्य सरकार और अन्य कई संस्थानों, प्रतिष्ठानों द्वारा प्रदत्त अवार्ड उनका दिन दूना सम्मान बढ़ाते रहे। 04 अप्रैल 2012 को राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा पद्मश्री से उन्हें सम्मानित किया गया। उनके सुपुत्र दिनेश तथा राजेन्द्र ने भी इस कला-परम्परा को साधकर कई नये प्रयोग किये हैं।

मोहनजी ने बताया कि पिछले 70 वर्षों से मिट्टी की मूर्तियां बनाते-बनाते आज यों तो उन्हें संतोष है कि यह कला पूरे विश्व में नामजद हुई है और बेपढ़े होकर भी वे कई देशों में घूम आये किन्तु इस धन्धे से अब रोजी-रोटी नहीं चल सकती।

उनके दोनों पुत्रों ने भी इस कला को सीखा पर पोता (पौत्र) इसे नहीं सीख पायेगा। मोहनजी तो उदयपुर के फतह स्कूल में चपरासी पद पर रहते हुए भी इस कला को बचाने में जुटे रहे पर अब आगे इसकी संभावना नहीं लगती कि इस कला का बचाव हो सकेगा।

मोहनजी ने बताया कि उनका वंश पीताजी से चला। पीताजी के बाद क्रमशः जो संतानें हुईं उनके नाम हैं- खेमाजी, महीरजी, ऊदाजी, जीताजी, देवाजी, राड़ाजी, भेराजी, भीमाजी, उड़दाजी, नंदलालजी (नंदाजी), डालचंदजी तथा चतुर्भुजजी। दिनेश का पुत्र उमेश है। मोहनजी के अनुसार उनके पूर्वज मारवाड़ के नाडोल से आये। कुलदेवी आशापुरा तथा गोत्र आसावरा है। उनके पूर्वजों ने आवला, जोडमा तथा नाना रागेला नामक तालाब बनवाये जो अभी भी अस्तित्व में हैं।

मोहनजी की मृण-मूर्तिकला को लेकर मैंने समय-समय पर अनेक पत्र-पत्रिकाओं तथा पुस्तकों में लिखा। विदेशी विद्वानों तथा अध्येताओं को भी मोलेला ले गया। अनेक स्थानों की यात्राएं कीं और विविध देवी-देवताओं पर पुस्तकें भी लिखीं। भारतीय लोककला मण्डल में भी संगोष्ठियां कीं। अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित मेलों, कार्यशालाओं में भी भाग लिया। मेरे साथ मेरी आत्मजा डॉ. कहानी भानावत तथा डॉ. कविता मेहता भी निरन्तर रहीं।

डॉ. कहानी ने तो 'मोलेला की मृण मूर्तिकला' नाम से एक पुस्तक ही तैयार कर दी जिसमें मिट्टी से लेकर मूर्ति-निर्माण तक की समग्र सामग्री संजोदी। इसमें विविध कथा-मिथक, किंवदंतियां तथा विधि-विधान सम्मत देवी-देवताओं की पूरी जानकारी है।

इसकी भूमिका में बालकवि बैरागी ने लिखा- 'डॉ. कहानी ने मोलेला को अपनी कलम द्वारा ग्राम-गाथा से भी आगे बढ़कर साहित्य में गद्य-गाथा का रोचक, प्रामाणिक और सरस रूप दे दिया है। यहां की मिट्टी का मातृत्व इतना अनोखा है कि उससे भारत के 33 करोड़ देवताओं की मूर्तियां बिना किसी सांचे के मोलेला के कुम्हार-प्रजापति अपने हाथों से बना देते हैं।

यह गांव विश्व-पर्यटन के तीर्थ का रूप ले चुका है। अन्तर्राष्ट्रीय मूर्ति कलाप्रेमी वहां आते हैं। चमत्कृत होकर मूर्तियां खरीदते हैं और अपने घरों तथा संग्रहालयों में सजाकर रखते हैं। कहानी द्वारा सरल और कुशल भाषा में आत्मीक और आध्यात्मिक अध्ययन हिन्दी के पाठकों को समर्पित किया है। कई तथ्य, उदाहरण और लोककथाएं सौंप कर काव्यगत का उपकार ही किया है।' और अंत में लिखा- 'एक स्मित मुस्कराहट चेहरे पर लाइये और मोलेला की मिट्टी को माथे पर लगाइये। शायद आपके ललाट के लेख सुगंधित हो जायें।'

शब्द रंजन

उदयपुर,बुधवार 15 सितंबर 2021

सम्पादकीय

प्रारंभिक शिक्षा में राजस्थानी पठन-पाठन

यह शकुन भरी सूचना है कि नई शिक्षा नीति में बच्चों की प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थानी में दी जायेगी। आजादी के अमृत वर्षों में निज भाषा की मान्यता के लिए लगातार आन्दोलन, धरने, ज्ञापन तथा हो-हल्ला होता रहा मगर सरकार बहरी-गूंगी नहीं होती हुई भी जैसे तमाशा ही देखती रही। उसके कानों में जूं तक नहीं रेंगी।

बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने गुलामी के दिनों में बुलन्दगी से लिख दिया था- 'निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति का मूल।' बाद में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी लिखा था- 'यह आधुनिक शिक्षा किसी विध प्राप्त भी यदि कर सको, तो लाभ क्या बस क्लर्क बनकर अपना पेट भर सको।' सो शिक्षा और भाषा केवल पेट भराई का माध्यम रह गई। भाषा के मसले में तो हमारा आज भी बेभाषा बेजबान ही है।

जो भी हुआ, शुक्र मानो के हमारे प्रान्त में राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए विगत पांच दशक से चल रहा आन्दोलन अभी भी कोई परिणाम नहीं दे पाया। लगता है हमारा लोक भी तन्त्र के मक्कड़ जाल में उलझ गया है। इतने वर्षों में हम अपनी भाषा तो भूले ही, पराई भाषा को भी नहीं अपना सके और न हिन्दी का जय हिन्द ही कर पाये। हिन्दी को तो विकृत किया ही, अंग्रेजी को भी उसके असलीपन से गुडिन्द कर दिया। अब एक नई हंग्रेजी निकल आई है। दैनिक अखबारों में यह गपड़सपड़ देखने को मिल जायेगा।

उम्मीद जगी है कि मायड़ भाषा की शिक्षा से प्रारम्भ में ही बालकों का अपनी मातृभूमि, राष्ट्रभूमि से जमीनी जुड़ाव होगा और वे जमीनी संस्कारों की घुटक से स्वयमेव ही वह सब कुछ ग्रहण कर पायेंगे जिसके लिए हमारे प्रयत्न करने पर भी कोई फल उर्वरित नहीं हुआ। कोई फूल सुगंध नहीं छोड़ पाया।

विश्वास है, सरकार कि यह घोषणा थोथी नहीं होगी। कोई राजनीति लपेटा नहीं देगी। इससे राजस्थानी का चहुं विकास होगा। लिखने वाले आगे आयेंगे। सभी विधाएं आबाद होंगी। अधिकाधिक पुस्तकें छपेंगी। स्कूलों के पुस्तकालय समृद्ध होंगे। सरकार का दायरा विस्तृत होगा। समाज में इसका प्रभुत्व बढ़ने से आम नागरिक को सबओर सहूलियत होगी।

देश-विदेश में शिक्षक दिवस

भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपने जीवन के 40 वर्षों तक एक शिक्षक के रूप में सेवाएं दीं। वे एक महान् शिक्षाविद्, दार्शनिक तथा कुशल वक्ता थे। उनका जन्म 5 सितम्बर 1888 में तमिलनाडु के तरुतानी में हुआ। उन्होंने कहा था कि मेरा जन्मदिन एक शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो मुझे गर्व होगा। उनके जन्मदिवस को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाने की शुरूआत 5 सितम्बर 1962 से हुई। शिक्षक दिवस दुनिया में लगभग 100 देशों में मनाया जाता है। 21 देशों में 5 सितम्बर को, 11 देशों में 28 फरवरी को, थाईलैंड में 16 जनवरी को और तुर्की में 24 नवम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 5 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

-डॉ. कांतिलाल यादव

नारायण सेवा द्वारा 21 जोड़े विवाहित

उदयपुर (वि.)। नारायण सेवा संस्थान द्वारा 36वें दिव्यांग व निर्धन नि:शुल्क सामूहिक विवाह समारोह में 21 जोड़ों ने एक-दूसरे का साथ निभाने का वचन लिया। संस्थान के संस्थापक कैलाश 'मानव', सह संस्थापिका कमलादेवी अग्रवाल, अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल एवं निदेशक वंदना अग्रवाल के सान्निध्य में विवाह सम्पन्न हुआ। 21 अलग-अलग वेदियों पर आचार्यों ने पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न करवाया। प्रत्येक जोड़े को बर्तन, सिलाई मशीन, बिस्तर, पलंग, गैस चूल्हा, घड़ी पंखा आदि के साथ दूल्हन को मंगलसूत्र, चांदी की पायल, बिछिया, अंगूठी, साड़ियां, प्रसाधन सामग्री व दूल्हे को पेंट शर्ट सूट प्रदान किए गए।

पर्युषण पर तपस्याओं का ठाठ

जैन समाज में वर्षा ऋतु का चार माह का समय चौमासा के नाम से जाना जाता है। इस काल में चारोंओर वनस्पति से धरती हरीभरी लगती है। यह समय धरती का प्रसवकाल होने से अनेकानेक जीवों की दृश्य-अदृश्य उपस्थिति से जैनी लोग स्थिर प्रवासी हो जाते हैं ताकि उनके द्वारा वनस्पतिकायिक जीवों का हिंसा से बचाव हो सके।

इन्हीं दिनों सभी नानाप्रकार की तपस्या-साधना करते आत्मोद्धार की ओर लीन रहते हैं। इसमें विविध व्रत-अनुष्ठान, धर्म-ध्यान, धारणा-पारणा, सामायिक-प्रतिक्रमण तथा धार्मिक क्रियाजनित कार्यों की प्रमुखता रहती है। मुख्यत: निराहार तपस्या की बहुलता देखी जाती है। पर्युषण जैसा धार्मिक उत्सव इस काल की खासियत है।

इसमें अन्तिम दिन संवत्सरी का होता है। इस दिन बनती कोशिश हर जैनी निराहारी रह अगले दिन क्षमापना दिवस पर वर्षभर में जान-अनजान में किये गये पाप-कर्मों के लिए सभी चौरासी लाख जीवयोनियों से शुद्ध अंत:करण से क्षमायाचना (खम्मत खामणा) कर आत्मशुद्धि करता है। छोटे-छोटे बच्चे भी इन संस्कारों से प्रभावित हुए प्रसन्नचित्त मिलते हैं।

ऐसी कठोर तपस्या-साधना-पालना जैनधर्म की अपनी अनूठी विशेषता है। कई तपस्वी पूरे जीवन ही तो कुछ पूरे वर्ष निराहार रहते हैं।

कुछ एक दिन भोजन फिर निराहार के क्रम से लम्बी तपस्या करते हैं। कुछ दो दिन भूखे फिर एक दिन भोजन करते मिलते हैं। अनेक ऐसे मिलेंगे जो आठ-नौ दिन निराहारी रहते हैं।

-डॉ. तुक्तक भानावत

सांवत्सरिक क्षमापना

सब जीवों से क्षमा मांगते,
सब जीव क्षमा हमको करिये।
मैत्री भाव हो सब जीवों से,
वैर भाव का हरण करिये।।

- शब्द रंजन परिवार

तपोधनी तुमको वन्दन हो

वैभव | सुनीता | नवरत्न | अनिल | नीरज | अशोक | भावना

भीण्डर के नागोरी परिवार के राजेश-वीणा के सुपुत्र वैभव तथा महावीर की धर्मपत्नी सुनीता ने नौ-नौ एवं अनिल-दिलखुश के सुपुत्र नीरज, नक्षत्रमल के सुपुत्र अशोक, रतनलाल के पुत्रद्वय नवरत्न, अनिल ने तीन-तीन दिन निराहार रह उपवास किये। इसी क्रम में उदयपुर में पेरामाउंट स्टेशनर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स के प्रोप्राइटर महावीरप्रसाद जैन के सुपुत्र नितेश जावरिया की धर्मपत्नी भावना ने आठ दिन की अठाई की तपस्या की। शब्द रंजन द्वारा तपस्वियों का हार्दिक अभिनंदन।

श्रीनाथजी को फूलों, फलों और कलियों की मालाएं

- चंदा हंसराज कापड़िया -

श्री नाथद्वारा के पुष्टिमार्गी श्रीनाथजी मन्दिर में विभिन्न प्रकार के फलों एवं कलियों को गूंथ कर माला चढ़ाने की परम्परा रही है। इसमें एक-एक पत्ती और कली को सुई में पिरोकर बड़ी लगन और भक्ति से माला तैयार की जाती है।

श्रावण के महीने में हिंडोले के दिनों में मोगरे या टगर की कलियों तथा लाल-पीले गुलाबों के बीच में हरा रंग सजाने के लिए तुलसी या दूसरी हरी पत्ती तोड़कर दोनों तरफ से मोड़कर बहुत ही सुन्दर माला तैयार की जाती है।

बीच-बीच में लाल गुलाब की पंखुड़ियां ज्यादा रखी जाती हैं। नीचे की ओर मृदंगी आकार में लटकन बनाया जाता है जिसमें सबसे नीचे लाल गुलाब, फिर टगर की कलियां और फिर पीला गुलाब रखते हुए मृदंगी आकार की माला की शोभा देखते ही बनती है।

लहरिये छाप पर आधारित मालाओं में मोगरा, टगर, जूही, चमेली की कलियां और लाल-पीले गुलाबों का प्रयोग किया जाता है। बीच-बीच में कमल की बिना खिली कली पिरोयी जाती है। लहरिया माला बनाने में हर बार गुलाब की दो पंखुड़ियां अलग-अलग मोड़ कर सुई में डाली जाती हैं।

उसके बाद दो और कलियां मोड़ते हुए एक लाइन लाल गुलाब की तो एक लाइन मोगरे की कलियों की

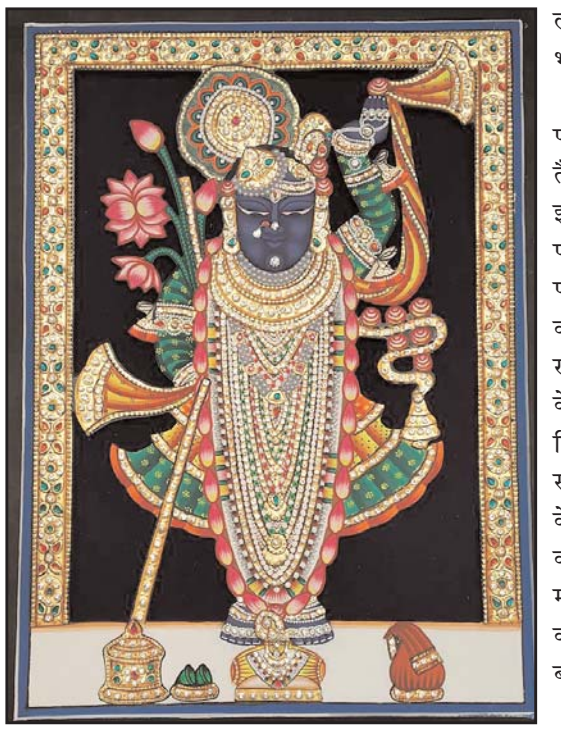

तैयार की जाती हैं। कमल की कली से पहले पीले गुलाब की पंखुड़ी से सारी माला लहरिये रंग में रंगदार लगती है। लटकने की जगह सीधी धारियां बनाई जाती हैं।

टगर की कलियां दूसरी कलियों की तरह जल्दी से खिलती नहीं और इनका रूप भी कई दिनों तक मोतियों की तरह गोल बना रहता है। जूही के सफेद फूल को सुई की नोंक पर रखकर उसकी पखुंड़ियों को अन्दर की ओर मोड़ कर पिराने से भी बड़े मोती का सा आभास होता है। लाल-पीले गुलाब की पंखुड़ियां मोड़ कर लगाने से फूलों के मोती और भी खिल उठते हैं।

रंग-बिरंगे कपड़ों की पट्टियों से भी माला एवं हार तैयार किया जा सकता है। इसके लिए कपड़ों की पतली-पतली पट्टियां काट, पट्टियों में बीचोबीच सुई से कच्चे टांके भर कर डोरा खींच लिया जाता है। कपड़े के स्थान पर सैटिन के पतले रिबन का प्रयोग भी हो सकता है। बीच-बीच में रूई के ऊपर रंगीन कपड़ा लगा कर पतले गोटे से लपेट कर मनके की तरह डोरे निकाल कर तारों से भी विभिन्न हार बनाये जाते हैं।

जैन साध्वियां विभिन्न रंग के धागों से बहुत ही सुन्दर मणिये तैयार कर खूबसूरत माला तैयार करती हैं जो पूजानुष्ठान पर फेरी जाती हैं। इसके अलावा पीलिया के रोगी को लहसन के कुलियों की माला पहनाई जाती है। किसी का स्वागत-सम्मान करने को तथा नया चेला बनाने के लिए भी माला पहनाई जाती है। माला के और भी अनेक उपयोग हैं।

खोज-खबर

हिन्दुओं में बाबा रामदेव, मुस्लिमों में रामसा पीर

देवी-देवताओं की लीला अपरम्पार है। कई बार लगता है, सृष्टि का असली संचालन तो उन्हीं के हाथ में है। वैसे भी प्रकृति को कब वश में कर पाया है मनुष्य! भारत भूमि की कई अनेक विशेषताओं में सर्व ओपित विशेषता यह भी है कि यहां पद-पद पर देवी-देवताओं का वास है।

उनकी लीलाओं का रहस्य चमत्कार देखने के लिए दो आंखें तो अत्यंत छोटी हैं। इन देवी-देवताओं के स्थान भी अजीब-अजीब नामों से जाने जाते हैं। देशनोक की करणी जहां चूहों के लिए जानी जाती है वहीं रामदेवरा का रामदेव बाबा का स्थल समाधियों के मंदिर नाम से ख्याति लिए है।

15 फरवरी 1973 को जैसलमेर के सगतमलजी शर्मा (70) से वहां प्रचलित रम्मती ख्यालों की जानकारी के साथ लोकदेव रामदेवजी का प्रसंग चल पड़ा तो उन्होंने बताया कि उनका स्थान रामदेवरा, रुणीचा बड़ा जाग्रत है। वहां समाधियों की बहुलता के कारण लोग-बाग उसे समाधियों के मंदिर के नाम से भी जानते हैं।

रामदेवजी की मुख्य समाधि पर कपड़े के बने घोड़े चढ़ाये जाते हैं। समाधि का मुंह पूर्व की ओर है। जिधर पूजा होती है वह भाग जीमणा है। रामदेवजी की प्रस्तर घोड़े वाली प्रतिमा के पास उनके दो लड़के साधाजी तथा देवजी की समाधि है। इनके अलावा नेतलादे राणी, गुरु बालनाथ, जंबोजी, मासीबाई, हड़बूजी, मेहोजी मांगलिया, देतियाजी पेथर, बोईतो साहूकार (बाणियो), पिता अजमालजी, भाई विरमदेव की समाधि है। रामदेवजी की समाधि के बीच उनके दादाजी रणछोड़जी तथा माता मेणादे की समाधि है।

रामदेव भक्त भारतीय लोककला मण्डल के नृत्य-कलाकार लालूराम मेघवाल ने 30 अगस्त 1976 को बताया कि वहीं पांच पीर मक्का-मदीना से आये जिन्होंने दातून कर ठूंठे वहीं गाड़ दिये जो रामदेवजी की करामात से पीपली के रूप में हरित हुए। ये पीपली रूंख वहां अभी भी हैं। रामदेवजी की बहिन डालीबाई ने उनसे तीन दिन पूर्व जीवित समाधि ली। वहीं डालीबाई का पत्थर का कंकण बना हुआ है। उसमें से लोग निकलते हैं। कंकण से निकलने पर व्यक्ति अपने मन में धारे पापों के प्रायश्चित से मुक्त हुआ मानता है।

मंदिर के बाहर बाण्या बोइता की बावड़ी है। यहां अंधे-लूलों को ले जाया जाता है। ऐसे लोग बावड़ी का सहारा ले वहां बैठ जाते हैं। जिसे बाबा का हुक्म हुआ होता है वह बावड़ी में गिरता पाया जाता है और रोग मुक्त हुआ बाहर आता है।

बाद में बावड़ी पर जाली लगा दी गई। लालूराम ने बताया कि कई लोग आस्थावश जमीन को जीभ से चाटते, बैठे-बैठे खिसकते, दण्डवत करते, गुलांछी खाते तो कुछ नहा-धोकर केवल लंगोट पहन खुले बदन में बावड़ी तक पहुंचते हैं। पीपली के पास ढालना यानी पालना है।

वहीं रामसागर तालाब है। हरजी तथा सुगना की समाधि पर कपड़े के छोटे-छोटे घोड़े चढ़ाये जाते हैं। नेतलदे की समाधि पर औरतें कांचली, ओढ़ना तथा कातरिया चूड़ियां चढ़ाती हैं। जोधपुर से पांच किलोमीटर दूर मसूरिया में भादवी बीज को मेला भरता है। यहां रामदेवजी के कपड़े के बने घोड़े बनाये जाते हैं। इसके अलावा पोकरण में बड़ी संख्या में छोटी साइज से लेकर बड़े-बड़े घोड़े तक बनाये जाते हैं।

लालूराम ने अपने बड़ेरों के मुंह से जो सुना, बताया कि पहले भादवी बीज को रामसागर में रामदेवजी का नीला घोड़ा अलपजलप जोत के रूप में दिखाई देता था। रामदेव बाबा गर्मी-सर्दी की मौसम द्वारिका में बिराजते हैं। भादवी बीज से ग्यारस तक रामदेवरा पधारते हैं जहां भक्तों को हर समय दर्शन देकर उनकी मुराद पूरी करते हैं। रामदेवरा मेले में जाने वाले लौटते समय वहां से तंदूरा, ईडोणी तथा कलश लाते हैं। दर्शनार्थी अपने घर लौटते समय स्वागतार्थियों को प्रसाद स्वरूप अपने साथ लाई घास की बनी कंठी तथा खांडचने देता है।

रामदेवजी ने कामड़िया पंथ चलाया। कामड़ लोग वर्ष भर ही वहां मिल जाते हैं। मनौती पूरी करने वाले कामड़ औरत से तेराताली स्वरूप भजन सुनकर जम्मा दिलवाते हैं।

रामदेवजी के घोड़े का नाम रेवंत था। यह घोड़ा उनकी तरह ही देव घोड़ा था जो विमान की तरह उड़ता अदृश्य होता जहां चाहे वहां रामदेवजी को पहुंचाता था। मेवाड़ के जरगा नामक पहाड़ पर भी रामदेवजी का आना हुआ। उनके घोड़े का चरवादार सईस जरगा था। रामदेवजी ने उसकी चाह के अनुसार उस स्थान का नाम जरगा देकर वहां धूणी स्थापित की।

प्रसिद्धि है कि गोरखनाथ को दी हुई गूगल से लीली घोड़ी, नरसिंह पांडे, मज्जु चमार, रतना भंगी तथा गोगा एक साथ पैदा हुए जो पांच पीर के नाम से जाने गये। इनकी साथ-साथ पूजा की जाती है। रामदेवजी ने हरजी भाटी को प्रसन्न हो कपड़े का घोड़ा दिया था।

कहा जाता है कि जोधपुर के निकट मसूरिया में एक रात जागरण हुआ। उसमें जोधपुर के राजा विजयसिंह भी शरीक हुए। वहां उन्हें लगा कि हरजी भाटी ढोंगी और पाखंडी है अत: उसे ताले में बंद करवा दिया और कहा कि यदि हरजी का कपड़े का घोड़ा दाना, घास और पानी ले तो समझूंगा कि रामदेव चमत्कारी पुरुष है ओर हरजी की साधनामूलक जो भी करामात लगती है वह पक्की है। यह सुन हरजी ने रामदेवजी की उपासना शुरू कर दी। देखते-देखते घोड़ा पूंछ हिलाने लगा और पास में रखा दाना, घास खाने लग गया। तब से रामदेवरा मेले में पहली आरती जोधपुर दरबार की होती है जिन्हें रामदेवजी ने पहला परचा दिया था।

रामदेवजी की करामात के किस्से जब दूर-दूर फैलने लगे तो पांच पीर उनकी परीक्षा लेने आये। रामदेवजी ने उन्हें भोजन के लिए कहा तो पीर बोले कि हम अपने ही कटोरों में भोजन लेते हैं जिसे हम मक्का भूल आये हैं। यह सुन रामदेवजी ने अपने मंत्र-बल से कटोरे उनके समक्ष कर दिये तब पीर बोले, आज से तुम सबके पीरों के पीर, रामसा पीर हो तब से वे मुसलमानों में पीर के रूप में जाने गये।

सन् 1515 की भादवी सुदी दसमी को रूणेचा में रामदेवजी ने जीवित समाधि ली। उनके यश गान में अनेकों ब्यावले, भजन, स्तुतियां, लीलाएं रची गईं। मेलों में बहुत सारा साहित्य छोटी-छोटी पुस्तिकाओं के रूप में दुकानों पर मिलता है जो फुटपाथी अथवा ठेला साहित्य के नाम से जाना जाता है।

रामदेवजी के मेले में मैंने भी कुछ दिन रहकर वहां के सभी स्थानों का अवलोकन किया और फुटपाथी रूप में बिकनेवाली रामदेव ब्यावला, रामदेव लीला, रामदेव जीवन रत्नावली, रामदेव लीलामृत कथा, रामदेव चालीसा नामक पुस्तकें खरीदीं और इनके लेखकों से भी भेंट की तब धर्मयुग और अन्य पत्रों में भी मैंने लिखा।

भाई साहब के बीकानेरी मित्र

छठे दशक में हमने कॉलेज की पढ़ाई बीकानेर में की। तब मेट्रिक यानी हाईस्कूल के बाद ग्यारहवीं-बारहवीं को इन्टर तथा तेरहवीं-चवदवीं को बी. ए. कहते थे। इन्टर कॉलेज के लिए रामपुरिया जैन कॉलेज जो प्राइवेट था और फिर आगे की पढ़ाई के लिए सरकारी डूंगर कॉलेज प्रसिद्ध था। यह सन् 1955-58 की बात है।

भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत मेरे अग्रज थे जो मेरे से तीन क्लास आगे थे। डूंगर कॉलेज के उनके खास मित्रों में आत्माराम शर्मा, मनमोहन बागड़ी, जयचन्दलाल कोठारी, शिवनारायण अग्रवाल, ओंकार पारीक, मंगल सक्सेना थे जो हमारे छात्रावास सेठिया जैन बोर्डिंग आया-जाया करते थे। भाई सा. के साथ मैं भी उनके घर-परिवार तक से परिचित हो गया था। सब मुझसे बड़ा स्नेह रखते थे। यहां तक कि भाई सा. के बीकानेर छोड़ने के बाद भी वे मुझसे आत्मीय सम्पर्क बनाये रहते थे। कुछ से तो मेरा अन्त तक सम्पर्क बना रहा।

ओंकार पारीक तो भाई सा. की शादी में उदयपुर तक आये। बाद में ये और मंगल सक्सेना तो उदयपुर में ही बस गये। जयचन्दलाल कोठारी सम्पन्न परिवार के थे। मेरा परिचय उनके पिताश्री लालचन्दजी कोठारी से भी था जो हर साहित्यिक तथा सामाजिक समारोह-संगोष्ठियों में भाग लेकर सबके बीच बड़ी सम्मानजनक प्रतिष्ठा लिये रहते थे। बाद में जब भी मेरा बीकानेर जाना हुआ, उनसे अवश्य भेंट की। सर्व समाजों में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। बड़ी ही आकर्षक दिखती-दिखाती फबती काया में सफेद धोती तथा सफेद टोपी उनकी विशिष्ट पहचान थी। आत्माराम के पिताश्री आयुर्वेद के जानेमाने चिकित्सक थे। उनके छोटे भाई बीकानेर शिवरती धर्मस्थल के प्रतिष्ठित महन्त बने। मेरा उनसे भी अच्छा परिचय रहा। सन् 2021 के कोरोनाकाल में उनका निधन हो गया।

आत्मारामजी भाषा विभाग, जयपुर में सेवाएं देकर मुक्त हुए। उन दिनों इन सबके व्यक्तिगत चित्रों का आदान-प्रदान करने का मुझे शौक था। मेरे पास सबके फोटो आज भी सुरक्षित हैं। आत्मारामजी से जब-तब भी मिलना होता, वे मुझे यह घटना अवश्य याद दिलाते कि पता नहीं किस शकुन से मेरा एक फोटो उनके पास सुरक्षित रहकर उनके पर्स में चला गया। एक दिन वह फोटो कहीं इधर-उधर हो गया तो उनका पर्स भी खाली रहने लगा। उन्हें आश्चर्य हुआ कि ऐसा इन दिनों क्यों घटित हो रहा है।

वे कुछ दिनों बड़े व्याकुल रहे पर एक दिन जब उन्होंने गम्भीरतापूर्वक विचार किया तो याद आया कि पर्स में भानावतजी का फोटो रहता था सो किधर चला गया। शायद यह भी कारण हो सकता है। उन्होंने इसके लिए अपना घर छान मारा। अन्त में उनकी एक पुस्तक में वह फोटो मिल गया। पर्स में रखने के बाद वे फिर पूर्ववत हो गये। तब से वे सदैव ही उस पर्स में मेरा फोटो बड़े सुरक्षित रूप में रखे रहते हैं। उससे उनका अर्थ भण्डार भरा रहता है। उनसे यह सुन मुझे भी अचरज होना था।

एक और बड़ी दिलचस्प घटना है जिसे मैं कभी-कभी याद करता हूं तो आश्चर्य करता हूं कि ऐसी तो शायद ही किसी के साथ बीती हो। यह किस के साथ घटित हुई, बताने की जरूरत नहीं है। नाम तो शायद आप भी नहीं जानना चाहेंगे। फिर भी सुनाने का जी कर रहा है। हुआ यह कि एकबार भाई सा. के एक मित्र के साथ मैं पता नहीं किस रंग में आकर इतनी घुलीमिली हमप्यारी बातें कर रहे थे कि उन्होंने अपने साथ बीता रोचक किस्सा सुनाते कहा कि यह जो उनके साथ घटा, शायद ही किसी के साथ घटा हो। बोले, 'वे जब विवाह के लिए एक लड़की देखने गये तब उन्होंने जो लड़की देखी, वह उनके सारे परिजनों को भी पसंद आ गई सो धूमधाम से विवाह सम्पन्न हो गया।

बाद में जब उस विवाहिता से उनका सम्पर्क हुआ तो उन्हें लगा कि यह वह लड़की नहीं है जो उन्होंने पसंद की थी। जो देखी थी वह तो अच्छी रूड़ी रूफाली तथा छरहरी काया लिये थी पर शादी कर जो लाये वह अपेक्षाकृत मोटी डीलडौल वाली निकली।' बोले, 'यह घटना ऐसी है जो मैं न अपनी नवोढ़ा को, न अपने परिजनों को और न सुसराल वालों से ही शेयर कर सकता हूं और समस्या कहने से हल भी होने वाली नहीं है फिर क्यों किसी का मन खट्टा कर उनके और अपने जीवन को खुशहाल होने से बचाऊं।' इतनी पुरानी इस घटना का मैंने भी अब तक किसी से जिक्र नहीं किया अब जब उनके-मेरे परिवार की भी वह पीढ़ी नहीं रही तो पड़दे में ही मैं इसका संकेत दे रहा हूं। यह बताने के लिए कि कभी-कभी समझी या नासमझी में ऐसी घटना भी गुजर जाती है जो नितान्त अकल्पनीय ही कही जा सकती है। **- म. भा.**

बाजार / समाचार

प्रो. भाणावत एवं डॉ. सोनी का अनुसंधान पत्र अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत

उदयपुर (वि.)। दी इंस्टिट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया न्यू दिल्ली की ओर से रांची झारखंड में आयोजित सम्मान समारोह में 'इंटरनेशनल रिसर्च अवार्ड 2021' की घोषणा की गईं। इसमें मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के लेखांकन एवं व्यावसायिक सांख्यिकी विभाग के विभागाध्यक्ष

प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत तथा डॉ. मोनिका सोनी को संयुक्त रूप से टैक्सेशन श्रेणी में उनके द्वारा लिखित अनुसंधान पत्र 'अकाउंटिंग ऐंड टैक्सेशन इश्यूज इन कार्बन क्रेडिट ट्रांजेक्शन' को अंतराष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय सर्वश्रेष्ठ पत्र होने के कारण सिल्वर अवार्ड से सम्मानित किया गया। जलवायु परिवर्तन की समस्या का कमर्शियल हल 1997 के क्योटो प्रोटोकॉल में सुझाया गया। उसके परिणामस्वरूप विश्व में कार्बन क्रेडिट के ट्रांजेक्शन प्रारंभ हो गए। इनसे लेखांकन एवं कर से संबंधित उत्पन्न समस्या के बारे में गहन रिसर्च कर प्रो. भाणावत एवं डॉ. सोनी ने अपने अनुसंधान पत्र में इसका हल सुझाया। इसे अंतराष्ट्रीय स्तर पर सराहा गया। सम्मान मुख्य अतिथि झारखंड के गवर्नर रमेशजी बेस तथा आईसीएआई के अध्यक्ष द्वारा प्रदान किए। आईसीएआइ के रिसर्च कमिटी के अध्यक्ष सीए अनुज गोयल ने बताया की यूएसए सहित 15 से अधिक देशों से 138 अनुसन्धान पत्रों को विश्व के पांच कॉन्टोनेंट्स के जूरी के सदस्यों ने मूल्यांकन किया।

पिम्स हॉस्पिटल में आरजीएचएस के अंतर्गत कैशलेस उपचार

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पिम्स) हॉस्पिटल उमरड़ा को राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान गवर्नमेंट हैल्थ स्कीम (आरजीएचएस) के अंर्तगत सरकारी कर्मचारियों, पेंशनधारियों और उनके आश्रित परिवारजनों के उपचार के लिए अधिकृत किया गया है।

चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि इस स्कीम के अंतर्गत आने वाले लाभार्थियों का सम्पूर्ण उपचार कैशलेस होगा। इसके लिए आरजीएचएस कार्ड साथ लाना होगा। पिम्स हॉस्पिटल में अधिकतर सुपरस्पेशलिटी व सभी प्रकार की ब्रॉड स्पेशलिटी स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ साथ विश्वस्तरीय मशीनों से युक्त लेबोरेट्री है। आमजन हेतु बहुत सी सरकारी स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध है। मुख्यता ईइसआई, चिरंजीवी स्वास्थ्य योजना, आयुष्मान भारत, महात्मा गाँधी स्वास्थ्य बीमा योजना, परिवार नियोजन व जननी सुरक्षा योजना, डॉट्स टीबी एवं क्षय रोग, राजस्थान एड्स कंट्रोल सोसायटी, नेशनल प्रोग्राम फॉर कंट्रोल ऑफ ब्लाइंडनेस इत्यादी इनके अंतर्गत आने वाले मरीजों का उपचार नि:शुल्क हो रहा है।

क्रिस्टा आईवीएफ सेंटर शुरू

उदयपुर (वि.)। क्रिस्टा आईवीएफ ने उदयपुर में अपना नया सेंटर शुरू किया है। इस सेंटर की पेशकश के साथ हर्शिता जैन और धीरज जैन द्वारा 2019 में शुरू की गई क्रिस्टा आईवीएफ बांझपन की समस्या का उपचार सभी जरूरतमंदों के लिए उपलब्ध कराना चाहती है, चाहे वे किसी भी क्षेत्र या राज्य से हों।

उदयपुर के सेंटर का मार्गदर्शन डॉ. अर्चना जैन द्वारा किया जा रहा है जिन्हें बांझपन संबंधित उपचार का लंबा अनुभव है। संतान की चाहत रखने वाले दंपतियों को विश्वस्तरीय उपचार मुहैया कराने में सक्षम इस सेंटर में आईवीएफ, आईयूआई, एम्ब्रायोलॉजी और सरोगेसी जैसे विभिन्न उपचार की सुविधा है और वे बेहद प्रभावी एवं किफायती हैं। आईवीएफ उपचार का खर्च हरेक बांझपन मामले के लिए अलग अलग है और यह खर्च जरूरी स्टिमुलेशन की मात्रा, शुक्राणु दानदाता, शुक्राणुओं की फ्रीजिंग, लेजर एसिस्टेड हैचिंग, आईसीएसआई, टेसा आदि जैसे उन्नत फर्टिलिटी ट्रीटमेंट के इस्तेमाल जैसे विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है। उदयपुर सेंटर में विभिन्न तरह की बांझपन समस्याओं के निदान के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी उपलब्ध है।

श्री पारस नलवाया का निधन

उदयपुर (वि.)। शब्द रंजन के सहयात्री श्री पारसमल नलवाया का विगत 27 अगस्त को निधन हो गया। पूना से श्री बनवारीदत्त जोशी ने बताया कि मूलत: छोटीसादड़ी निवासी श्री नलवाया स्थायी रूप से रतलाम में बस गये थे। वहां के अनेक धार्मिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक संस्थाओं के सक्रिय संरक्षक रह आर्थिक सहयोग करते रहे। उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

एंकिलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस के मरीजों के लिए 'सपोर्ट ग्रूप' का गठन

उदयपुर (वि.)। अंतरध्वनी ने इंडियन रुमेटोलॉजी एसोसिएशन के सहयोग से एंकिलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस (गठिया, सूजन की बीमारी) के लिए एक रोगी सपोर्ट ग्रूप के उदयपुर चैप्टर की शुरुआत की है।

इस सपोर्ट ग्रूप के गठन का उद्देश्य इस बीमारी से पीड़ित मरीज एवं इसके उपचार से संबंधित विशेषज्ञ डॉक्टर, फिजियोथेरेपिस्ट, योग प्रशिक्षकों और आहार विशेषज्ञों को एक साथ जोड़ना है, जो कि इस क्षेत्र में नई दवाएं, नए शोध और निष्कर्ष साझा करके मरीजों की सहायता करते हैं। राजस्थान में 150 से अधिक एंकिलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस के मरीज अंतरध्वनी के साथ पहले से जुड़े हुए हैं।

उदयपुर चैप्टर का शुभारंभ इंडियन मेडिकल एसोसिएशन, उदयपुर के अध्यक्ष डॉ. आनंद गुप्ता, रुमेटोलॉजिस्ट डॉ. विष्णु शर्मा और डॉ. मोहित गोयल तथा अंतरध्वनी के प्रोजेक्ट मैनेजर और हाई-टेक आईसोल्यूशन्स के एसोसिएट डायरेक्टर आशीष जोशी की उपस्थिति में किया गया।

जोशी ने कहा कि अंतरध्वनि का मिशन डॉक्टरों और मरीजों को जोड़ना

और एंकिलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस के प्रबंधन के बारे में जागरूकता फैलाना है। अंतरध्वनी के पहले से ही अहमदाबाद, सूरत, वडोदरा और जयपुर में चैप्टर कार्यरत हैं और अब तक 2700 से अधिक रोगियों के साथ काम कर चुके हैं। हम आने वाले महीनों में राजस्थान और अन्य राज्यों के और शहरों में रोगी सहायता समूह बनाने की योजना बना रहे हैं।

एंकिलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस एक ऐसी स्थिति है जहां रीढ़ की हड्डी के सभी या कुछ जोड़, संधि स्थल और हड्डियां बांस की तरह आपस में जुड़ जाती हैं। यह अक्सर रीढ़ की हड्डी में सूजन का कारण बनता है और गंभीर मामलों में, यहां तक कि हृदय या आंखों को भी प्रभावित करता है। इसे एक दुर्लभ बीमारी के रूप में वर्गीकृत किया गया है क्योंकि प्रत्येक 10,000 में से 8 व्यक्ति इससे पीड़ित हैं। यह रोग आजीवन और लाइलाज बीमारी है, लेकिन नियमित व्यायाम और चिकित्सा सहायता रोगियों को राहत प्रदान कर सकती है। इसके पहले लक्षण पीठ के निचले हिस्से और नितंबों में लगातार दर्द और जकड़न हैं, जो धीरे-धीरे समय के साथ होते हैं। इस रोग में दर्द दोनों तरफ महसूस होता है और कम से कम तीन महीने तक बना रहता है। यह आमतौर पर सुबह और रात में बहुत तेज होता है, लेकिन हल्के व्यायाम या गर्म स्नान से स्थिति में सुधार किया जा सकता है।

स्वास्थ्य सेवा परियोजना के तहत् मोबाइल वेन का शुभारंभ

उदयपुर (वि.)। ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने और ग्रामीणों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने के उद्धेश्य से हिन्दुस्तान ज़िंक द्वारा वॉकहार्ट फाउण्डेशन के साथ मिलकर देबारी क्षेत्र के आसपास के 30 गावों के लिए स्वास्थ्य सेवा परियोजना हेतु मोबाइल हेल्थ वेन की शुरूआत की गई। जिला कलेक्टर चेतन देवडा ने मोबाइल हेल्थ वेन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन ओमप्रकाश बुनकर, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रागिनी अग्रवाल, देबारी ज़िंक स्मेल्टर के डायरेक्टर लीलाधर पाटीदार उपस्थित थे।

जिला कलेक्टर ने कहा कि ग्रामीण स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए ज़िंक की मोबाइल हेल्थ वैन की पहल सरानीय है। इस मोबाइल वेन में प्रशिक्षित चिकित्सक एवं स्टाफ देबारी एवं आसपास के गांव-गांव में जाकर नि:शुल्क स्वास्थ्य सुविधाएं एवं परामर्श देंगे। मोबाइल वेन से 10 से अधिक प्रकार की जांचे मौके पर ही हो सकेगी। प्राथमिक जांच के बाद गंभीर बीमारी के रोगियों को राजकीय जिला चिकित्सालय रेफर करने के आवश्यक प्रयास किये जाएंगे।

लीलाधर पाटीदार ने कहा कि इस वेन में चिकित्सक, फार्मेसिस्ट एवं नर्स प्राथमिक स्वास्थ्य जांच, उपचार, परामर्श के साथ नि:शुल्क दवाइयां भी उपलब्ध कराएंगे। समारोह में ज़िंक के हेड कार्पोरेट अफेयर्स वी जयरमन, हेड सीएसआर अनुपम निधि, हेड कार्पोरेट कम्यूनिकेशन दीप्ती अग्रवाल उपस्थित थे।

फ्लिपकार्ट के किराना डिलीवरी कार्यक्रम की घोषणा

उदयपुर (वि.)। फ्लिपकार्ट ने त्योहारी सीजन और बिग बिलियन डेज को देखते हुए 'किराना डिलीवरी कार्यक्रम' की घोषणा की। इसके तहत इस त्योहारी सीजन में फ्लिपकार्ट ने देशभर के 100,000 से ज़्यादा किराना पार्टनर्स के ज़रिए अपने किराना डिलीवरी कार्यक्रम को मजबूत बनाया है। ये पार्टनर्स आने वाले त्योहारी सीजन के दौरान लाखों शिपमेंट डिलीवर करेंगे।

फ्लिपकार्ट में सप्लाई चेन के वाइस-प्रेसिडेंट, हेमंत बद्री ने कहा कि फ्लिपकार्ट ने स्थानीय स्टोर्स और दुकानों को डिलीवरी पार्टनर के रूप में ऑनबोर्ड आने में मदद करने के लिए वर्ष 2019 में यह कार्यक्रम शुरू किया था। इस पार्टनरशिप के लिए फ्लिपकार्ट ने विशेष टीम बनाई है। यह टीम किराना कारोबारियों को समझ, विशेषज्ञता, अनुभव और टैक्नोलॉजी मुहैया करवाकर बिना किसी परेशानी के लाखों डिलिवरी करने में सहायता करती है। फिलहाल 100,000 किराना डिलीवरी पार्टनर्स हैं और इनका संख्या पिछले साल की तुलना में दोगुना हो गई है। फ्लिपकार्ट अपने लास्ट-माइल नेटवर्क और पहुंच को मजबूत बना रही है, विशेष रूप से उन पिन-कोड्स और कस्बों में जहां पहुंचना मुश्किल है, और डिजिटल अपस्किलिंग के साथ-साथ किराना स्टोर्स के लिए आय के अतिरिक्त अवसर पैदा कर रही है।

लैंप लाइटिंग समारोह आयोजित

उदयपुर (वि.)। गीतांजलि कॉलेज एवं स्कूल ऑफ नर्सिंग के बीएससी नर्सिंग के 13वें एवं जीएनएम के 12वें बैच के विद्यार्थियों के लिए लैंप लाइटिंग एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

डीन डॉ. संध्या घई ने कहा कि नर्सिंग सबसे नोबल पेशा है। इसमें लोगों की जिन्दगी बचाने और उन्हें खुशहाल बनाने का मौका मिलता है। एक अच्छी नर्स में ज्ञान व सक्षमता के साथ संचार कौशलता, बुद्धि तत्परता, उपाय कुशलता, भावनात्मक स्थिरता, दयालुता व सहानुभूति का होना बहुत जरुरी है।

मुख्य अतिथि प्राचार्य एआईआईएम, जोधपुर के डॉ. सुरेश के शर्मा ने नर्सिंग के महत्त्व व नर्सेज की भूमिका पर प्रकाश डाला। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. योगेश्वरपूरी गोस्वामी ने विद्यार्थियों को नाइटिंगेल शपथ दिलाई। इस मौके पर गीतांजली ग्रुप के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, सीईओ प्रतीम तम्बोली, गीतांजली यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. एफएस मेहता, गीतांजली मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. नरेन्द्र मोगरा, रजिस्ट्रार भूपेंद्र मंडलिया, मेडिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट डॉ. सुनीता दशोत्तर ने छात्रों को शुभकामनाएं दीं। अकादमिक ऑफिसर कुलदीप पाटीदार ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मेरी प्रदर्शनधर्मी यात्रा (12)

-देवीलाल सामर

बर्लिन में ही मैंने वह कांटों वाली दीवार भी देखी जो पूर्वी पश्चिम के बीच मानव-मानव को अलग करने के लिए बनाई गई थी परन्तु मुझे उसे देखने की कोई दिलचस्पी नहीं थी। केवल देखने के लिए देखा था परन्तु मैं बर्लिन के मेक्सिम थियेटर का वह अनुभव नहीं भूलूंगा जब मुझे शूद्रक लिखित मृच्छकटिकम का जर्मन भाषा में अनुदित बसंतसेना नाटक देखने का अवसर मिला था। वह नाटक दो बरस से उस थियेटर में चल रहा था और उसके टिकिट ब्लेक में बिक रहे थे परन्तु मैं ही उसे अवलोकन करने वाला प्रथम भारतीय था।

प्रख्यात कठपुतली मर्मज्ञ फिलपोट तथा सामरजी (1965)

दर्शकों में मुझे देखकर अभिनेताओं में एक प्रकार की घबराहट फैल गई कि एक भारतीय नाट्य-विशेषज्ञ आया है जिसके समक्ष हम यह भारतीय नाटक खेल रहे हैं। मध्यान्तर में ही मुझे अन्तर क्षेत्र में बुलाया गया और मेरे आशीर्वाद की कामना की। मैंने अपना आशीर्वाद दे तो दिया परन्तु वह नाटक इतना परफेक्ट था कि उसमें दोष ढूंढ़ने से भी नहीं निकाल सकते। भारतीय पोशाक बड़े सलीके से पहनी हुई थी और भारतीय अंगभंगिमाओं लज्जा एवं व्यवहार में किसी प्रकार का दोष नजर नहीं आ रहा था। फिर भी उस नाट्यदल ने अपने खर्चे पर पांच दिन और बर्लिन में रोक लिया यह जानने के लिए कि भारतीय नारियां वेणियां कैसे बनाती हैं और जिन राग-रागिनियों के पुष्ट प्रभाव के लिए उन्होंने प्रयोग किये कि वे सही हैं या नहीं।

मुझसे जितनी बन पड़ी मैंने मदद की। उस दल में पूर्वी जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता काम करते थे। मैंने अपने यात्रा स्थलों का जानबूझकर विवरण प्रस्तुत नहीं किया और न मैंने यही लिखा है कि भोजन, निवास, व्यवहार, भाषा आदि की क्या कठिनाइयां रहीं। इस आत्मानुभव वाली पुस्तक में यह सब बचकाना लगती इसीलिए मैं उन्हें जानबूझकर टाल गया परन्तु मैं अपने अत्यंत आत्मिक अनुभवों की अभिव्यक्ति यहां नहीं टाल सका। मेरा यह प्रवास लगभग तीन माह का रहा।

और मैं अपने विचारों की दृष्टि से हवा में न उड़कर जमीन पर ही विचरण कर रहा हूं। भारत लौटकर मैं कृत संकल्प हो गया कि मैं अपने कठपुतली कर्म को आगे बढ़ाऊंगा और संस्था को कम से कम कठपुतलियों की दिशा में देश की एक अग्रणी संस्था बनाऊंगा।

इस बीच हमने यह संकल्प कर लिया कि विदेशों के इस अनुभव के बाद द्वितीय अखिल भारतीय कठपुतली समारोह आयोजित करना चाहिये। यह समारोह कलामण्डल की एक बड़ी उपलब्धि इसलिए बना क्योंकि इसमें कलामण्डल ने जो पुतलियों का प्रदर्शन प्रस्तुत किया वह सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुआ। वह था हमारी कठपुतली 'रामायण नाटिका'। इस समारोह तक तो हमारा नया भवन भी बनकर पूरा हो चुका था। और यह समारोह भी हमारे नवीन रंगमंच पर हुआ।

'रामायण पुतली नाटिका' को तैयार करने में हमें पूरे छह माह लगे। यह नाटिका राजस्थानी पुतलियों की पारम्परिक शैली में थी और वहीं तंत्र अपनाया गया जो किसी समय राजस्थानी पुतलियों के 'अमरसिंह राठौड़' के खेल में अपनाया गया था। सबसे बड़ी खुशी की बात तो यह थी कि इस नाटिका को प्रस्तुत करने के लिए हम देश में प्रथम बार पुल स्टेज का निर्माण कर सके। जमीन से उठे हुए पुलों पर खड़े रहकर पुतलियां चलाने का प्रथम सफल प्रयास देश में हमारे यहीं हुआ।

यह प्लै शैली में पारम्परिक परन्तु प्रस्तुतिकरण तंत्र में अत्यन्त आधुनिक था। उसका ध्वनि संयोजन, प्रकाश व्यवस्था एवं दृश्य विधान किसी भी आधुनिकतम कठपुतली विधान से मुकाबला कर सकता है। दिल्ली के अखिल भारतीय कठपुतली समारोह में इसी नाटिका ने प्रथम पुरस्कार जीता था।

इस नाटिका की सफलता पर ही शायद हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड ने यह तय किया था कि कलामण्डल के गोविन्द को कठपुतली कला और क्राफ्ट में प्रशिक्षण हेतु जेकोस्लोवाकिया के सर्वोच्च पुतली प्रतिष्ठान में डॉ. जान मलिक के संरक्षण में पुतली प्रशिक्षण प्राप्त किया। विदेश से लौटकर उन्होंने कठपुतलियों का सर्कस बनाकर चारचांद लगाये।

पुतलियों में इतनी उपलब्धियां प्राप्त करके हमें ऐसा लगा कि हमें 1965 में होने वाले तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में भाग लेने हेतु रूमानिया जाना चाहिये। वहां से हमें निमंत्रण तो प्राप्त हो ही चुका था परन्तु प्रश्न यह था कि जावें कैसे। पहले तो भारत सरकार ने यह कहकर टाल दिया कि भारतीय पुतलियां इस योग्य नहीं हैं कि वे विश्व समारोह में दूसरों के सम्मुख खड़ी भी रह सकें। मुझे वे दिन भी याद हैं जब मैंने प्रोफेसर हुमायू कबीर से यह कहा था कि हमें आप विश्व समारोह भेजकर हमारा हौंसला बढ़ाइये। इसके जवाब में उन्होंने यही कहा था कि भारतीय पुतलियां यदि वहां गई तो उन्हें अन्य पुतलियों के सामने मुंह नीचे करना पड़ेगा।

यह बात 1965 के अगस्त माह की है। सितम्बर में हमें अपने पुतली दल के साथ बुखारेस्ट जाना था। उस समय हमारे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री थे और शिक्षामंत्री श्री छागला। हमने कई माह पूर्व भारत सरकार को सहायता के लिए आवेदनपत्र दे दिया था परन्तु अनेक रिमाइण्डर भेजने पर भी हमारी सुनवाई नहीं हुई। हम चाहते थे कि भारत सरकार हमें अपना प्रतिनिधि बनाकर भी भेजे तो भी कम-से-कम यात्रा व्यय सम्बन्धी कुछ तो आर्थिक सहायता प्रदान करे। इस बीच हमें इंडियन कॉन्सिल की ओर से दिल्ली के आजाद भवन में रामायण पुतली नाटिका के प्रदर्शन के लिए निमंत्रण प्राप्त हुआ।

शिक्षाविद् श्रीमती फिशर तथा सामरजी (1969)

आजाद भवन में देश-विदेश के दर्शकों के सम्मुख हमारी पुतली नाटिका और सर्कस प्रस्तुत किये गए। प्रदर्शन इतना सफल हुआ कि कुछ अखबारों ने तो यह तक लिखा- 'यह प्रदर्शन किसी भी विदेशी पुतली दल के साथ कतार में बैठ सकता है और इस तरह की कृति से भारत सरकार को धन्य होना चाहिए।'

तत्कालीन प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने अकस्मात ही अखबारों में छपे वे रिमार्क पढ़े और उनके मन में यह उत्सुकता जागी कि यह चमत्कारिक दल कौनसा है जिसके बारे में अखबारों ने इतनी तारीफ की है। उन्होंने अपने पुत्र हरि को हमारी तलाश में भेजा जिन्होंने हमें शास्त्रीजी से मिलाया।

शास्त्रीजी ने कहा कि यह हमारे देश का गौरव है कि आपने पुतलियों में इतना कमाल हांसिल किया है। हमारे हर्ष का ठिकाना नहीं रहा परन्तु हम यह नहीं चाहते थे कि शास्त्रीजी हमारा प्रदर्शन देखे बिना ही हमारी तारीफ करें। मैंने कहा, आपने हमारा प्रदर्शन देखा ही नहीं और यह तारीफ क्यों कर रहे हैं। हमने कहा हम आपके बंगले पर आकर रामायण दिखला सकते हैं। शास्त्रीजी ने हमें उसी रात उनकी कोठी पर आने का आमंत्रण दे दिया।

कुल एक घण्टा और दस मिनिट में रामायण समाप्त हुई। शास्त्रीजी मेरे पास आए और मुझे गले लगा लिया। उस समय रात के 11 बज चुके थे। उन्होंने अपने सेक्रेटरी को कह फोटोग्राफर बुलाया और हमारे साथ फोटो खींचवाया।

मैंने रूमानिया फेस्टीवल में जाने की इच्छा दोहराई। उन्होंने दूसरे दिन नोर्थ ऐवेन्यू वाले दफ्तर में मिलने को कहा। शिक्षामंत्री छागला ने बताया कि प्रधानमंत्रीजी ने आपके प्रदर्शन की बड़ी तारीफ की है। बताइये, मैं आपकी किस तरह की मदद कर सकता हूं। उन्होंने दूसरे दिन फिर हमें बुलाकर वह कागज थमा दिया गया जिसमें हमारे लिए आने-जाने की 35000/-रूपये की स्वीकृति अंकित थी। हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। आभार प्रदर्शन के बाद हम उदयपुर के लिए रवाना हो गये। हमारी विदेश की रवानगी के लिए अभी भी एक महीना बाकी था। इसलिए हमने समस्त तैयारियां शुरू कर दीं। - **क्रमशः**

फ्लिपकार्ट की सप्लाई चेन मजबूत बनाने की तैयारी

उदयपुर (वि.)। भारत के स्वदेशी ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने त्योहारी सीज़न के दौरान लाखों उपभोक्ताओं की बढ़ती जरूरतों के मद्देनज़र देशभर में अपनी सप्लाई चेन को मजबूत बनाने के लिए विस्तार किया है। फ्लिपकार्ट के इस कदम से, ऑनलाइन शॉपिंग करने वाले ग्राहकों के साथ-साथ लाखों एमएसएमई, विक्रेताओं, कारीगरों एवं किराना स्टोर्स को बाजारों तक अपनी पहुंच बढ़ाने में मदद मिलेगी। इस मकसद से, फ्लिपकार्ट ने देशभर में असम, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, कर्नाटक, महाराष्ट्र, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, तेलंगाना तथा पश्चिम बंगाल में 36 नए बड़े फुलिफलमेंट एवं सोर्टेशन सेंटर स्थापित किए हैं।

फ्लिपकार्ट ग्रुप के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कल्याण कृष्णमूर्ति ने कहा कि फ्लिपकार्ट ने देशभर में 1,000 से अधिक नए डिलीवरी हब्स स्थापित कर अपनी लास्ट-माइल पहुंच को भी मजबूती दी है। आगामी बिग बिलियन डेज़ के दौरान बड़े पैमाने पर होने वाली बिक्री और मांग के मद्देनज़र, क्षमता बढ़ाने के अलावा स्टोरज, सोर्टिंग, पैकेजिंग, मानव संसाधन, प्रशिक्षण तथा डिलीवरी जैसे क्षेत्रों पर निवेश करना जरूरी है जो त्योहारी सीज़न के दौरान, रोज़गार के अतिरिक्त अवसरों को भी पैदा करेगा। फ्लिपकार्ट ने अपने 'लास्ट माइल डिलीवरी पार्टनरशिप' के तहत् किराना स्टोर्स के साथ अपनी भागीदारी को भी मजबूत बनाया है और साथ ही उन्हें टैक्नोलॉजी आधारित डिजिटल इकोसिस्टम का हिस्सा बनाया है। इस साल, फ्लिपकार्ट ने 1,15,000 से अधिक लोगों के लिए त्योहारी सीज़न की मांग के चलते रोज़गार के नए अस्थायी अवसर भी जुटाए हैं जिनमें से 15 प्रतिशत महिलाओं और नि:शक्त जनों के लिए हैं।

इलेक्ट्रिक टू व्हीलर फ्रैंचाइजी चेन का राजस्थान में विस्तार

उदयपुर (वि.)। इलेक्ट्रिक वन मोबिलिटी इंडिया प्रा. लि., भारत की सबसे तेजी से बढ़ रही मल्टीब्राण्ड टू व्हीलर ई-मोबिलिटी कंपनी ने फ्रैंचाइजी मार्ग के जरिए राजस्थान में विस्तार करने की योजनाओं की घोषणा की। यह कदम भारत के तेजी से बढ़ रहे इलेक्ट्रिक वाहन बाजार में बड़ी हिस्सेदारी हासिल करने की कंपनी की मजबूत रणनीति के अनुरूप है। यह घोषणा इलेक्ट्रिक वन मोबिलिटी इंडिया प्रा. लि. के फाउंडर अमित दास ने की है।

अमित दास ने कहा कि भारत बदलाव की राह पर है। टेक्नोलॉजी और पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने की योग्यता के संदर्भ में ऑटोमोटिव उद्योग तेजी से विकसित हो रहा है। इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की पेशकश स्वच्छ ऊर्जा की पहल के तौर पर हुई थी, क्योंकि वे कम उत्सर्जन करते हैं और लंबे समय से ओईएम की व्यवसाय रणनीतियों का अभिन्न हिस्सा बने हुए हैं। अपनी शुरूआत से ही हम एक लक्ष्ये पर चले हैं और वह है इलेक्ट्रिक परिवहन में भारत का पहला भरोसेमंद इकोसिस्टम पेश करना जो भारत के ईमोबिलिटी सेगमेंट में उद्यमिता के मॉडल को बढ़ावा दे। अगस्त 2020 से ही हम प्रभावशाली प्रदर्शन कर रहे हैं और उत्तर, पूर्वी तथा पश्चिम भारत में कई जगहों पर 40 बेहतरीन आउटलेट्स खोल चुके हैं और अब धीरे-धीरे दक्षिण भारत में प्रवेश कर रहे हैं। इलेक्ट्रिक वन को उल्लेखनीय ढंग से 5000 से ज्यादा डीलरशिप आवेदन मिले हैं और हम इस साल के अंत तक 100 और आउटलेट्स खोलने के लिए भागीदारों के साथ बातचीत कर रहे हैं। इलेक्ट्रिक वाहनों में काफी उछाल देखा जा रहा है और यह वृद्धि के लिये तैयार हैं।

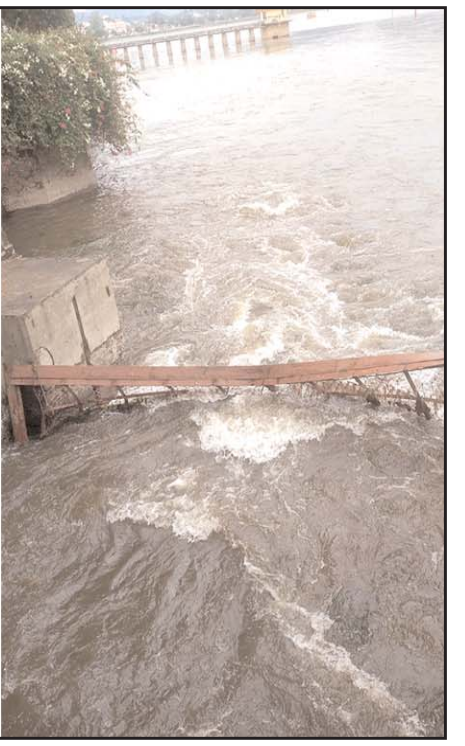

उदयपुर का विश्व प्रसिद्ध फतहसागर विशाल जलराशि में अंगड़ाई लेते हुए। सर्वाधिक जलराशि से ओतप्रोत पीछोला की फतह। फोटो - राजेंद्र हिलोरिया

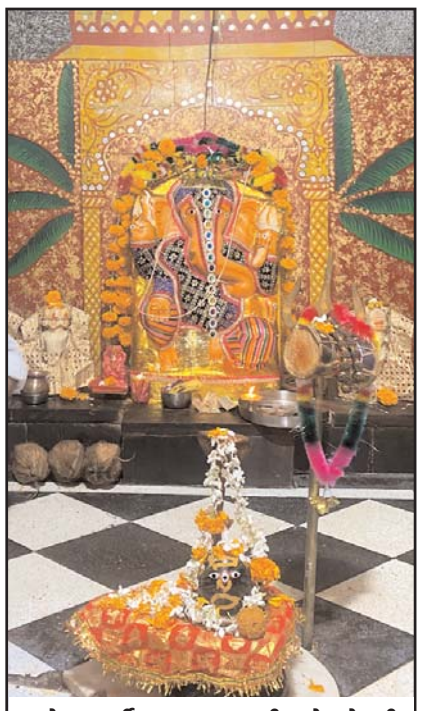

गणेश चतुर्थी पर कष्णपुरा की गणेश टेकरी पर गणेशजी की श्रृंगारित प्रतिमा।

वन्यजीव एवं मानव के बीच संघर्ष रोकने में उपयोगी पुस्तक

उदयपुर (वि.)। वन्यजीव एवं मानव प्रजाति के बीच बढ़ रहे संघर्ष को देखते हुए पर्यावरणविद् डॉ. सतीश शर्मा ने 'वन्यप्राणी बचाव एवं पुनर्वास' नामक बहुत ही सुन्दर और उपयोगी पुस्तक लिखी है।

डॉ. शर्मा ने बताया कि प्राकृतिक आवासों में तरह-तरह के मानवीय व्यवधान कई जगह वन्य प्राणियों को अपना प्राकृतिक आवास छोड़कर भटकने पर मजबूर कर रहे हैं। भटकते-भटकते ये कई बार मानवीय आबादियों, खेतों, सड़कों, रेलवे लाइनों, औद्योगिक परिसरों जैसी जगहों पर पहुंच जाते हैं। कई बार दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं। कई बार स्वयं दुर्घटना के कारण भी बन जाते हैं। ऐसी परिस्थितियों में जनधन की हानि रोकने एवं वन्य प्राणियों को संकट से निकालने हेतु त्वरित बचाव एवं पुनर्वास कार्यों की जिम्मेदारी वन विभाग पर आ जाती है। इस पुस्तक में कुशलतापूर्वक शीघ्र सुरक्षापूर्वक व्यावहारिक विधियों की विस्तृत जानकारी तथा वन विभाग एवं वन्य प्राणी सुरक्षा से जुड़े विभिन्न संस्थाओं की क्षमता को बढ़ाने के कारगर उपायों पर प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में 119 वास्तविक रेस्क्यू ऑपरेशन के अनुभव को भी स्थान दिया गया है। इसके अलावा चिड़िया घरों के 13, स्तनधारियों के 32, पैंथर के 34, टाइगर के 8, पक्षियों के 9, सरीसृपों के 23 रेस्क्यू ऑपरेशन का रोमांचक वर्णन किया गया है।

उल्लेखनीय है कि डॉ. सतीश ने राजस्थान वन विभाग में 36 वर्षों से अधिक समय तक अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। इस दौरान वे अपनी श्रेष्ठतम सेवाओं के लिए अनेक बार पुरस्कृत एवं सम्मानित किये गये हैं।

सुविवि में महीनेभर टीकाकरण शिविर

उदयपुर (वि.)। मोहनलाल सुखाड़िया विवि के छात्र कल्याण अधिष्ठाता सभागार में एक माह तक कोविड-19 टीकाकरण किया जाएगा। सुखाड़िया विवि, केयर इंडिया एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के संयुक्त तत्वावधान में यह टीकाकरण शिविर प्रतिदिन सुबह 8 से शाम 8 बजे तक आयोजित होगा। शिविर में ऑन स्पॉट रजिस्ट्रेशन के माध्यम से कोविशील्ड एवं कोवैक्सीन की पहली एवं दूसरी डोज दी लगाई जायेगी। कार्यक्रम का उद्घाटन विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार सी.आर. देवासी, वित्त नियंत्रक दलपत सिंह राठौड़, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत ने किया।

राधाष्टमी पर जगदीश चौक स्थित राधावल्लभ मंदिर में पारंपरिक ढाढ़ा-ढाढ़िन नृत्य फोटो - राजेंद्र हिलोरिया

मुख्यमंत्री की हिन्दी दिवस पर शुभकामनाएं

जयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने हिन्दी दिवस पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि सदियों से हिन्दी भाषा भारतवासियों के विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं प्रभावी माध्यम रही है। देशवासियों को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ ही दुनिया के कोने-कोने में बसे करोड़ों भारतीयों को मातृभूमि से जोड़े रखने में हिन्दी भाषा ने एक महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाई है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने हिन्दी को समृद्ध, सशक्त एवं जन-जन की भाषा बनाने में साहित्यकारों के योगदान को भी याद किया। उन्होंने प्रदेशवासियों से आह्वान किया है कि वे अपने कामकाज एवं व्यवहार में हिन्दी भाषा का अधिकाधिक उपयोग कर इसके गौरव को बढ़ाने में अपना योगदान दें।

हिन्दी भाषा में अद्वितीय क्षमता

उदयपुर (वि.)। लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने कहा कि हिन्दी की ताकत का ही यह रूतबा है कि मल्टीनेशनल कम्पनिया हिन्दी का इस्तेमाल कर रही है। वर्ल्ड लैग्वेज डेटा बेस के इथोनोलॉज संस्करण में दुनियाभर की 20 सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी तीसरे स्थान पर है। आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग में लायें। इसके लिए शासन प्रणाली, न्याय व्यवस्था तथा उच्च शिक्षा में इसे अपनाया जाना होगा। यह अच्छा निर्णय है कि अब प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में दी जायेगी।

कांग्रेस मीडिया सेंटर पर हिन्दी दिवस पर आयोजित गोष्ठी में अध्यक्ष पंकजकुमार शर्मा ने कहा कि आजादी के 75 साल बाद भी हिन्दी भाषा राष्ट्रीय भाषा नहीं बन पाई। हिन्दी किसी जाति की भाषा न होकर देश की पहचान बनाने वाली महाभाषा है। विश्व की सभी भाषाओं में हिन्दी श्रेष्ठ भाषा है।

हिंदी क्या सचमुच में राजभाषा है ?

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

हिन्दी वास्तव में भारत की राजभाषा है भी या नहीं? यदि राजभाषा होती तो कम-से-कम देश का राजकाज हिन्दी भाषा में चलता लेकिन राजकाज तो दूर, घर का कामकाज भी हिन्दी में नहीं चलता।

गुलामी के दिनों में हिन्दी का स्थान ऊँचा था लेकिन आज हिन्दी की हैसियत किसी अछूत या दलित जैसी हो गई है। संसद का कोई कानून हिन्दी में नहीं बनता। सर्वोच्च न्यायालय का कोई फैसला या बहस हिन्दी में नहीं होती। सरकारी कामकाज अंग्रेजी में होता है। सारे विश्वविद्यालयों में अंग्रेजी अनिवार्य है। ज्यादातर विश्वविद्यालयों में पढ़ाई का माध्यम ही अंग्रेजी है। छोटे-छोटे बच्चों पर भी अंग्रेजी इस तरह लदी होती है, जैसे हिरन पर घास लाद दी गई हो। बच्चे अपने माँ-बाप को भी आजकल मम्मी-डैडी कहने लगे हैं। माताजी-पिताजी शब्दों का लोप हो चुका है। 'जी' अक्षर उनके संबोधन से हट चुका है। भाषा से मिलने वाले संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं।

हिन्दी अखबारों और टीवी चैनलों को अंग्रेजी शब्दों के बोझ ने लंगड़ा कर दिया है। हर साल जो करोड़ों बच्चे अनुत्तीर्ण होते हैं, उनमें सबसे बड़ी संख्या अंग्रेजी में अनुत्तीर्ण होने वालों की है। भारत के बाजारों में चमचमाते अंग्रेजी के नामपटों को देखकर लगता है कि भारत अभी भी अंग्रेजों का ही गुलाम है। अगर आप बैंकों में जाकर देखें तो मालूम पड़ेगा कि लगभग सभी खातेदारों के दस्तखत अंग्रेजी में हैं। आपका नाम हिन्दी में है, फिर हस्ताक्षर अंग्रेजी में क्यों? यदि नकल ही करना है तो पूरी नकल कीजिए।

हिन्दी कभी राजभाषा बन पाएगी या नहीं, कहा नहीं जा सकता लेकिन वह लोकभाषा बनी रहे, यह बहुत जरुरी है। राजभाषा वह तभी बनेगी, जब हमारे नेतागण नौकरशाहों की नौकरी करना बंद करेंगे। हमारे नेता वोट और नोट में ही उलझे रहते हैं। उन्हें शासन चलाने की फुर्सत ही कहां होती है। यदि देश में कोई सच्चा लोकतंत्र लाना चाहे तो वह स्वभाषा के बिना नहीं लाया जा सकता। दुनिया के जितने भी शक्तिशाली और मालदार राष्ट्र हैं, उनमें विदेशी भाषाओं का इस्तेमाल सिर्फ विदेश व्यापार, कूटनीति और शोध-कार्य के लिए होता है। भारत में आपको कोई भी महत्त्वपूर्ण काम करना है या करवाना है तो वह हिन्दी के जरिए नहीं हो सकता।

पैरा पेल्विक रीनल सिस्ट का सफल ऑपरेशन

उदयपुर (वि.)। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने पैरा पेल्विक रीनल सिस्ट से परेशान मरीज का सफल ऑपरेशन किया है। ऑपरेशन में मूत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. क्षितिज रांका, लेप्रोस्कॉपिक सर्जन डॉ. विश्वास जौहरी, डॉ. हनुवंतसिंह राठौड़, डॉ. प्रकाश औदिच्य, डॉ. विजय, डॉ. शिल्पा, चन्द्रमोहन शर्मा एवं अनिल भट्ट का सहयोग रहा।

डॉ. रांका ने बताया कि मांगरोल निवासी 56 वर्षीय लाल मोहम्मद को पिछले दस महिनों से सीनें में दर्द, चुभन, नसों में खिंचाव एवं पेट में दर्द की शिकायत थी। गत दिनों उसे पीएमसीएच में दिखाया। जांच में मरीज के बाएं गुर्दे में 14 सेंटीमीटर की पैरा पेल्विक रिनल सिस्ट का पता चला। इस पर मरीज की लेप्रोस्कोपिक डीरूफिंग एवं कनेक्शन रिपेयर कर डीजी स्टेंटिंग की गई। मरीज और परिजनों ने चेयरमेन राहुल अग्रवाल को धन्यवाद दिया। मरीज अभी पूरी तरह से स्वस्थ्य है और उसे डिस्चार्ज कर दिया है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।